MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4346**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ऐँ नमः॥ ॥समरूं सरसति सामिणी। प्रणमुं सदगुरु पाय। निकर जोडी वीनवुं। मांगूं एक पसाय॥१॥ सं
रसा वचन द्यउ सरसती। सुगुणा नामा सियसमं तारा सदगुरु संपत्ति सोनि धिकर ग्र। निरमल बुध्य उ गुरु नाम
॥२॥ सुरु बउ कूतनी उपई। प्रत्येक बुद्ध वखाण॥ जिम पूरिमाण चाडियो। तिम चाक उपरमाण॥३॥ दान
सील तप भावना। च्यार धरम प्रधान। सील सरीषो को नहीं। इम बोल्या धर्मांन॥४॥ कंनक कोडि
दान द्यइ। कनक कनाग बडि जिन गेह। सील अधिक पवित्र एहथकी। इहां को नहीं संदेह॥५॥ सहस चउरा
सी साधु नइं। प्रतिलाभ्या फल जेह। किसनपक्ष सुकलपक्ष दंपती। जिमाड्या फल तेह॥६॥ चउसठि
चुरण नमइं। जे पालइ सुध सील। इहभव दे पदवी लहइ। परभव पामइ लील॥७॥ इहडक बीस कुको
डपइ। सीलवतनां नाम। ब्राह्मी चंदनबालिका। इत्यादिक अभिराम॥८॥ तिणि कारणि सगतिइ
तणुं। मृगावती चरित्र। सावधांन थाईसांभलउ। इक मनकरउ सुणउ विचार॥९॥ ढाल पहिली॥ चउपई
लप नी॥ राग रूपाल॥ ॥जंबूदीप जोयणमान। भरतक्षेत्र तिहां तिपरधांन। साढा पचवीस आरिज दे
स। अवर देस तिहां नहीं प्रमलेस॥१०॥ कछ देस एहवुं अधिकान। जासु के लाभ तणउ उपमान। मारी इस
र ... निवास। धनचंद सहूनी पूरइ आस॥११॥ ऊंच ऊंच संपा नबहु याम। सोभातन ति कोअ तिपर
धान। तिमां देसमइं कोसंबी पुरी। जाणे इंद्रपुरी अवतरी॥ विबुधलोक ह्यइ गुरु नइ मान हाइ हाइ
बहु सुख संतान॥१२॥ कुमनाना दो वक्ष्यबहु सपास। जाण पाड जाणमूं कीक ... रतन भांडरा
लाभ्रा मथ्यी। देसुक उ अप्रण रति नयी॥१३॥ प्रासाद उत्तंग कप रिसहली। कमलनित्रनइं कवियान ग्री।
सांण नगर विद्धि जो बालनामी॥ भ्रम रसुदरी आवी घणी॥१४॥ चंदरण वाला जिहां महावीर। पक्षवासपारां
गोपीजा बहु गात रसाल। पंखी जन नहीं तसु तन काल॥ २

पाम्य तनुअवतारा चउ१ श्लोकसो वडइ रिद्धि समृद्ध। कोसंबी नगरी वरसिद्ध ॥३॥ सतानीकानहीं राजा लखमा
र वीरन्यायइ गुणनिलउ। आणवहइ सिरसकोक्त कोप्रआ मंडि मधुकर सिरक्त समनी अज्ञा ॥४॥ वयय वीर
ता नासी गया। वनमाहि फिरइ ताणसथया। फलतइ फूल करइ आहार। सोव विना पामे नहीं पार ॥५॥
अरि नारी आसु जलमेला। कालतउ कासुलमांदेलेल। दय जमघरि सि राजा तणउ धून लतउ सनीपा
यउ घणउ ॥६॥ चंद तणी परि सिरोरा भरइं। कोर तक्क तक्क ग विसरइ। अमृत याबी कलानिवास व
णि। एक लंक नहीं अवरे जतास ॥७॥ न्याय घंट बांधी दरबारि। डवै सलोका तणउ उपगारि। न्याय
तु पाव सक्क रइ आपमुखी सक्क कोइ लोक वसइ तिहां सुखी ॥८॥ पहिली ढाल पूरी थइ। देसनगर
वीवर्णनमइ। समयसुंदर कहइ राग कृपाल। केतिक आगइ नइक हिज्यो ढाल ॥९॥ ढालबीजी
नायकानी रागकेदारउ॥ ॥ तसु घर राणी मिरगावती रे। सुंदर रूप निधान रे मृगावती। वेरानसि
तेसती रखाव। एक एक थी परधान रे मृगावती। रूप कला गुण रूवडी रे लाल। रूवड नेसील अ
चारे रे मृगावती ॥ आंकणी॥ स्यांम वेणी वइंसोत नउर। क पालउ वडी नपरे मृगावती। अदिक्रूपद
घणी आविय उरे लाल। मसकत मणिया टोप मृगा० विडि गमा मागु छी मोतली रे लाल। बाध्यउ तिमि
तुसि अपतरे मिगाव॥ विविसमरुछी सिंदूरा थउ रलाल। भगवानु अरस मउतात रे मिगाव॥ आ०कू०॥ सिस
दलतालउ जीनो घर्कारि। मिवइइ सर देवरे मिगा व०॥ तेमातु दिनपसाकरइरे लाल। विना उरनिम
मवरे मिगावती०॥५॥ रूप व॥ नड मकमलनीपाखडरि। अ वीयालीआ तुरूप रे मिगाव॥ रदवेध
तीकटकी रदरि लाल। देखि अधणदो रूमरे ॥५॥ रूप०॥ निरमल त्रीषी नासिका रे। जाणे दीवो अ

घार रे मिगाव॥ कालिमहि किहां दीसइ न दीरेला। आनयलह रदरदलि गाररे मिगाव॥६॥ रूप०॥ अति रूडी रसना व
लीरे। अधर प्रवाल निवाल रे मिगाव॥ सरसति वदनि कमल वसइ रे लाल। तसु मोतिण की माल रे मिगाव॥७॥ रू
सुमस तिमि नतुवेदलतरे। वाणी अमृत नसताव रे मृगाव॥ कंठे कटोष रूरेट व्यउ रे लाल। नस्यो नतलेपर सावरे रू०
॥८॥ कंवेकोकिल प्रीछ वडउरे। नेत त्रूण कम सतरे। एमारे मसका रिको रलाल। रूपइ फरस नेतरे मृगाव॥ आरू०
केली वीदल कला चिकारे। कमल सुको मलहाथ रे मिगाव॥ रिछिनइ सिद्धि यइ देवता रेलाल। नित्य वइ सइवे
साथ रे मृगाव॥१०॥ रूप०॥ विरद दय कमल अतिसुरउरे। धरमबुद्ध आमासरे मृगाव॥ कटिलंक डीनां केसरी
रे लाल। सेवइ नित वनवास रे मृगाव॥११॥ रूप०॥ चरण कनक नांका लवारे। ऊनतअति सुकमाल रे मृगाव
नसरीना अतिदीपता रे लाल। दरपण जिम सुविसाल रे। मिगाव॥१२॥ वचनवर मधुर रागिणी रे। अतिदातार नचा
रे मृगाव॥ लगत घणुं सतरतार नरिलालसस्थीनउ एह आनार रे मृगाव॥१३॥ रूप०॥ एवी ढीठा लडाणउमारझा
ट काकेरा दाहर मृगावती। समयसुंदर कहइ सांसलउ रे लाल। रागकेदार रसाल रे मिगाव०॥१४॥ रूप०॥
सर्वगाथा॥२४॥ ॥दूहा॥ सतानीक राजा नणइ मंत्री बुद्धिनिधान। नामजुगंधरति समत। मामनगत माव
धान॥१॥ कामकाज निडी राजना सकंमत्री नइ सुंपि। विषयतणा सुख विलसइ राजा चित नधरि चुप॥२॥ स
वंगाथा॥२६॥ ढाल त्रीजी रागकेदार गोडी॥ कारखि क तणसमार देहा॥ एह नी ढाल॥ राजा नइ अति
वइ लम्म तिवर। मणि रूप वदारा रे। एणि मिरगावती अतिघणुं न लरा। सालरि जसु पनारा रे॥१॥ मिगा
वती राजा मनि मानी। आतम जीवन प्राणा रे। मालति जिम मधुकर लपटाणउ प्रीतम अे मन जाणा रे॥२॥
मिगाव॥

आकणी॥ जांणग्रवी ए त्रियावती राणी। सकल लक्षण गुणसोहइरे। वक्रोक्त नवेलण वद्धराई। कंनतणवमन
मोहइरे ॥३॥ त्रिया॥ कबही सरस सिलोक वषाणइ। कबही राग अलापइरे। कबहीक विनहीयाली
दूहइ। कबही समस्या आपइरे॥४॥ त्रि०॥ तावस गति अति मवि नीसेग। ज्ञान अमर नरे जइरे। बीजी सोकि
तणा जे नामा। चित लिख्यां तम जइरे॥५॥ त्रि०॥ आपण नदीय आवरजा लीधउ। त्रियावती पटराणीरे। जिम
चंपक पाषाण सिलाडी। लोहनय त्यइं लगुनोणीरे॥६॥ त्रिया०॥ इम संसार ना सुख भोगवती। कुपनउ
गर्भ नवोनोरे। जिम हरख दिसि चंद विराजउ। सीप सीहइ जिम मोनचि। ७॥ त्रि०॥ प्रगद्य वपुं फुरता वस्मे
लो गरलनी हृदि उणवधरे। जाणे गरत सूतनी टीका। ग्रुपत अरथ समक्षा वइरे॥८॥ मू०॥ एकदिन रांणी
मोहल लउ कुप मनउ। पिण हरखती दीहिल जेरे। दिन हखुली थाय इसी रांणी। नासुअपाय नहीमू हिलउरे॥९
त्रिगा॥ एकदिने राजा आरोणी दीवी। चिंतातुर निलसांणीरे। इव्य करा जा जे मस्यानिइं किणकारे लिहइ नालीरे
॥१०॥ मू०॥ ब्बालि सोनतइ की ननेना हो। वचन किणइं जु फलोप्यबरे। देस नगरी श्री द्यालिरका डु। तसुउ
मरा णवकोप्यवरे॥११॥ मू०॥ ज्ञुकुशमाटम्ब कनइया उसरे। करइ सकुको जाजीरे। पिणको हलवइ इजउ
नहीं इकार। वातननही काढवी जोरे॥१२॥ मू०॥ रुधिर तरीवा वजिमांदि कोल्लु। न तसु कआणि दहोईरे।
कहइं राजा हो हलव इवं सूरिस। कसिसु उपायति कोईरे॥१३॥ मू०॥ कोस्लो एहनउ ए आप गुसारइ। पुत्रउ
सीपुरता परिरि। अनुरामी अनुपमव मसागी। सहुकलकुसमा परिरे॥१४॥ मू०॥ तीजीढाल समणीकोहलानी
रागकेदारा गउडीरे। समयसुंदर कहइ इरसिकुज सहुने। आविसह सुणिवाडोडीरे॥१५॥ मू०॥ सर्वगाथा 2.
पर॥

उल्लाव अथी॥ मधुकरनी॥ रागजइतसिरी॥ रायसणे मुंहनानणी। करउ कोई दाय उपायराजारा
णीकोहल उप्रसवउ। दिन हउ मली थाइराजा॥१॥ कोहलउपूरइ नारिनउ। कहियअनेक प्रकार राजा
सोहाणि एसा चीतिका। डोढन इव मिलर नार राजा॥२॥ कोह०॥ मंत्रि उ गंध्रबी नवइ। करिस्युं उपाय
राजा। राणीरो कोहलो इ रिस्युं। सिगलेम लिसुस वराजा॥३॥ कोह०॥ बाविकरावी बागमइ। पाणीतरोय
वनं मराजा। मादिक सतोमि लम्या। जाणे कोहलकं मराजा॥४॥ कोह०॥ छिवरांणी जिरगावती। वावकि
कीलपाजाइ राजा। आस्तरण पाटिक्ष्या अति सतला। आणंदइं जिनमा वराजा॥५॥ को०॥ सरस वडो वसि
रइधरया। कंबेळ समामाळ राजा। वेसकस तलवस्त्र नव। तिलविराजनिता लराजा॥६॥ कोह०॥ मारिण क
चालीम ल्लपती। हरतज वाषहा श्रिराजा॥ सधवनहू सिर छत्र धरइ। सदीय समाणी साश्रिराजा॥७॥ कोह०
राभ गिरीमलया। गिरी। वंसावलीसुनि चार राजा। हरबोली दासा नणउ। इवित उदार विचार राजा॥८॥ को
गीतगान करइ गोरडी। अदभुत सरवनयाथ राजा। चउरंग सेना सुपरवरया। साथि सतानीक राय॥
॥९॥ को०॥ आवी रांणी नावडी। अति सुंदर सोपान राजा। रांणीयइं नीकी लिना। मानसहु ससमान राजा।
॥१०॥ को०॥ पडगउथा कोकरियइ। राजा रत्नवरपना मराजा॥ मा वधान चिहुं दिसि रख्या। सामंतक
रूपालराजा॥११॥ कोह०॥ लोकपाल जाणि आवीया। राणी रिष्या काजि राजा। सूरसुभट तनपर रख्या। श्री
पआपण सकोसाडि राजा॥१२॥ को०॥ रांणी कोलहरंग सुं। जिमलीचणी मसिमाहि राजा। जिम बलि 3
हीगरहरूपसी। पीबीकरइं अबरा मइराजा॥१३॥ कोह०॥ कोहलउपूरउ नारिनउ। नारीनयन विसाल

राजा।लालसी नेमी लनीसरी।कुसीया वडसाल राजा॥४॥डाल॥ तास खंवधूसनणी।डेतसरी रायबंधरा
जा।समय सुंदर कहै दिवकउ।सारंडपंषी संबंध राउ॥१॥राजा॥ सर्वगाथा॥२६॥ ॥दूहा॥ वा
वडकीलीनी सरी।श्रंगउ घाडे नेह। लालरंग लागी रहउ।जां लगे रुधिर न देह॥१॥सारंग नामा पंषियउ आ
गनसमेतउ देषि।भरततेतनी वउ कतरूउ।नरबक रमविशेषि॥२॥श्रामिषपंषीण्हबंध सलउ मिल्यउ
कतस्क।वरणीय हिकमी चल्यउ।सकुदेषनां वसिरा॥३॥ऐरे वितथ्यता।कीभाको डिजा तवे।तवपणि
पापापंषीअउ।लेगयउ नारि रतन्न॥४॥इम उजरे सुरतट।सरस धजकदी राय।पापी सारंडपंषीयउ।
मु ऊडी वनले जइ॥५॥सकदू बमुलि सकु मिल्या।सामंत कटपालापेषत पंषी ले गयउ।राणी नइ तत
काल॥६॥पंषी हूवइ वालीया।सेना नी सुवनीका।सांभि सेना अतिघणी।करदैष्टि निरषीका॥७॥ढाल पा
चमी॥नारी॥रागकेदारउ॥ ॥करइरे विलापमिरगानती।रायकी बंधावइ छूंजीवन प्राणसुमाडूती
॥१॥रायकी बंधावइ॥सारंडपंषीकुंअ पहरी॥रायकी बंधावउ चरणविकमा हिलेधरी॥रायकीबंधा
वय।नपप्रहार वडवेदना।रा०॥विरह विथा बेक वेदना॥२॥रा०॥कुटंब छानी कुंवीहनी।रा०॥कुं
अबलासंकट पड़ी।रा०॥मी सुषपड़ी मिरगली।रा०॥सीबाण सुषि विडंकली॥रा०॥पामे नार सुष लधु
इरी सयण।सापमुये पडीक दिरी॥५॥रा०॥निजप्रीतम सत मुखकोई यइ।रा०॥राणी रुप तरी सूइ घइ॥
॥७॥रा०॥कोइ सूर वीर सेनापती।राय०कोइदी नदयाल महापती॥८॥रा०॥मरत धनीकुमारकीरा
करइरे क्रिपा कोइ मोरडी॥९॥रा०॥सतानीक नी कुंपति मैं नाम॥सुं०॥चेउ राय नणी सुता।मो नुणा चे ३

करम यां कोतुटे न तारिइ॥ एहवात सगवंत कहा॥२४॥ति०॥पंचमि कालविरहा तणा ति०॥
ने लणा राणी नी सुसा।रा॥थ०॥देदे कुपड़ी परवसा सुं०॥१॥प्रीतम बिण कुंकार कुं॥सुं०॥विरह वेदना सुं०२९
किणनइ कहूं॥सुं०॥डालविण किम रहै मा बली॥सुं०॥वात केता कहुं पा विली॥सुं०॥कुण कमतिमुक एणपरिं
कुपनी॥सुं०॥अनरथ नीवात कुपनी॥३॥सुं०॥हा हा पाप किसा कीया॥सुं०॥विरह विभ्रम मय दीया णी॥२५
सुं०॥सा धम इह कोइ सतापियउ॥सुं०॥कि हालेजासी पापीयउ॥४॥सुं०॥केडकरे न दि कोअडा॥सुं० उली(
जीवणकी आसा तजी॥सुं०॥५॥कुण आणइ क रिस पइ किसु॥सुं०॥सेकट सबल पम्युं इ इसउ॥६॥सुं
इम विलाप करतीथकी॥सुं०॥न कुकिण बोडा बीस्की॥७॥सुं०॥सेनानीइ विंथ यउ॥हिवकुणवांसे
जिनश्रीगणवरनेगमउ॥१०॥जिनधरम बांधावइ।श्रीहिमाणी श्रासरणी॥हिव०व लिगयउ तेभरती
घ पी।जिनधर्म बांधावइ॥११॥श्रागइ थी जपवरिमहो।हि०॥कटक पाछउ श्रावी वही॥१२॥जि०
हा हा कारसब लोकवी।हि०॥रामरा गीइ सउ कउ श्रो॥१३॥जि०॥दूहा॥१॥सेनानी सिगली कहउ॥
राणीनण उसरूप।इस कइ ठेश्वरणीप डउ उ।मूर्छागत थयो रूप।सर्वगाथा॥१४॥ढाल बही भनश्रव
ती सुकमाल एहनी॥ढाल॥ राजा मन निरा णी वसी।करे रे विलापश्रनेको जी।हा हा सुंदरि किहां गई
नावइ के मन श्राघो जी॥१॥राजा०॥सीतल उपचार करी।राजा की श्रीसचे तो जी॥प्राण प्रिया वलिसांभ
रीजी।दुष करे तसु देतो जी॥२॥राजा०॥मंत्रि सुगंधर वीनवइ।सुण सामी महारायो जी।दुष न कीजइ
राजाजी नारि नउ।लोका मांहि हासी थायो जी॥३॥राजा०॥श्रागे पिण सीता हरी।श्री राम चंदनी नारी
जी श्रावे वलि द्रुपदी श्रपहरी।इसु पंफ बगर ता रो जी॥४॥राजा०॥दुषन कीजइ राजा श्रतिघणो॥

कोऊ उदाय उपाय तडी। तिण कारण राणी तणी। चलित्तुं निरतिक राय तडी॥६॥ राजा प॥ चंदप्रद्योतन राय
नइं। तइं जीतउ बहु वारो जी। तेउज विंना सां वली। लेस इरा सुं आ पारो जी॥७॥ रा०॥ सूरवई बालक सकरी
पालित लीय रिराजो जी। ते णी निरतिक रा विस्या। सवजा सुइं सकुना जो जी॥८॥ रा०॥ राजा मंत्रि स्वजन सु
णी। पालइ राजप विनो जी। न्याय तत पाय सकरे सली। पिण रांणी सुं विनो जी॥९॥ रा०॥ दिन इराजा निरद
यता बिना सकुस हनो सं सारो जी। दिस परदेस ना रिनी। निरतकर इवार वारो जी॥१०॥ राजा प॥ इण परि
चव दव रसागय। इहा वरस समा नो जी। कुंण इक्का रघयो नहीं। तेसुण इप सावधानो जी॥११॥ राजा
डालव हीबोहा तणी। राजा विरद विलो पो जी। समय सुंदर कहइ मोहनी। कर मत ण बहु कोपो जी॥
॥१२॥ सर्वग॥ ७२॥ ढाल सातमी॥ राग गउडी कडी नी॥१॥ इक दिन महाजन आवए। दुख
आगइ करए कोडी। बेकर जोडी वीनवइ। सुणि राजन सुविवेको जी। सुविवेक सुणि प्रभु रूप कोइ वे
चतो दीवउ अम्ह। मणि जडित कांकण एक नक केरउ। नाम किनण त्यज अम्हे तिलं इहां थंडे सी डि सम
दा। आलिंगण सुख पावए। अत्यंत हरख न कलउ राजा। इक दिन महाजन आवए॥१॥ राजा थली
विमास धु ही यडे कुम नमा यो जी। दाहा राणी मुई सही। तिण कांकण वेचायो जी। वेचाय कांकण
तेण कारण। वली अइ हतेह नइं। तिम पुरुष किहां कुण वसइ कांकण के मला नउ ए रमइ इकु
लीम नाम इ छी लइउ। तइं वसुंब निइ मना सए। मइ लखुउ कांकण ने पारसुण राजा वली यवि
मास प॥२॥ कुंमलया च लिनेन रक्षा य झं राज मो नी सारो जी। पारधि वहु तइ वेम सुं पसियवुं उ। ४
२

उरिहारो जी। उरिहार चित्र कचुंभि घदिरू। एआम्र वेषव पाणि या। मृगले मकंडा रसी इसाल डुं मछ
आपण व सिआ णीया। फल फूल लोऊ न करूं गीवा। नील डी सुं सुपलउ। वांसुलीवा उ वांस केरी। कुं
मलयाबलव नर रूं॥ २॥ अहि चिंदन रुवे ठिय उ। इक दिन दीव उस को पो जी। लांबी जा लत बका
वन उ। मच कमण आटोपो जी। आटोप फण अति घणुं काल उजो मजा ल धरघ नचटा। मणि सीस कवके
जाणि नीजल ला। देषि कि व इरूं करा। ते साप मारण सणी राजा न। ऊटकि ध उगमइ का ढीय उति साप नाम
णि लिणकारण अहि चिंदण न रुवे ठियउ॥३॥ बाल को इन ब बोलीय उ। ऊव उ अकरि निजर दाथो जी।
मो मां मां कहै मारि मां। हिंसा दुर गति सा थो जी। दुरगत साथ एक ही हिंसा। केम की जइ पार की। पर
जी वने दुष आपे तिह जावे नारकी। जिण जीवरा ध्य उ मारत उ तिणमे कुआ धिकक नकुदी य उ। नेत
णीमारि मा सर पडे नर बाल को इन बबोलीय उ॥४॥ तेबा लक अति सुंदर रू। रूप इं देवकुमारो जी। अंग
वतीस लक्षण व सइं। विनय विवेक विचारो जी। सुविचार जी व दया टी पाव इ। करइं पर उपगार एम सु
घन वन अभिरत धार वरसइं। सौभागी गुण धार ए। तनुन दन सुनिम चंदस रिषो। नय न कमल अंगी
करू। गुणवर णा नाकक स्के नी। ते बालक अति सुंदर रू॥५॥ तिण कह उ कांमा रइं अही। मय कली
मणि न इका ओ जी। मोती हार विचइं कल सइं। मध्य नायक मुक्ता जो जी। मुकताजा डइस्यइं मध्य ना
यक छुसी धा स्पइं लीलडी। जिण देह मुक्ता सुं वेठि करती। राति दिन सि घडी घडी। पिण एक पडि घड़
मारिजे मो। आहेर उगम इ इम कही। जिण उगका वीर स्य वकरतउ। तिण कस्यो कांमार इ आही॥६॥

मयकरउ अभिग्दइ काजीजी। मोतीहार विचइ कुंरूड़ं। माता पासि बालक गयउ। वीनती करइ कर जोडि
डी। कर कंकण छइ उच्छक मानजी। पुत्रनी हरउ को मेली। पुत्र नइ हर तको दइ। माता दीयउ कांकणा ला
धनउ। तिणि सरूउ विरह विराग सघलउ। दुःख प्राणी साधनउ। लियउ आणि दीधउ लेखक को कण। पणि
अतिहरख तिघयउ। जीवतउ राज्य अछउ सायराज नी। माता पासि बालक गयउ। ॥६॥ तेमणि कांकण आणि
ल लेउ। आहि मणिकेदइ मानोजी। रतन अमूलिक सारिषउ। आसरण अनिपरधा नोजी। परधा नव्या
वणा लेइ दीधउ। तोलइ तिनइ मइं तदा। तिप हिरे घाथे कइ दरपित। पिणवली करइ आकंद्या। सुणि कंत।
कोसंबी जाइ नइं। वेचि कांकण गुणा। निलउ। कोनमा कुं कलत्रा। पिखी तम। नेम पिधां कण आतिस ल
॥८॥ एविरतांत का कण नणउ। राजा नमइ कस्तउ णमोजी। पांच वरस रह्या उ माहरइं। पहिलोघम दा
घेमोजी। प दिरीयउ घमदा घेम कांकण। पतइ वेचण आणीय गा। वेचतो हाटे हटि दीगउ। नगर लोक
पिछाणीयउ। पटा लसान मिकांन सुणतां। राजा मनि आणंद घणउ। गणि समय सुंदर कइ इणपरि।
एविरतांत कांकण तणउ। ॥१०॥ सर्वगाथा ११२॥ दूहा॥ सतानीक हरषित हूवउ। सेस लिसकुं विर
तांत। मनमांहि इम चिंतवइं। प्रगायउ पुन्य कंत। ॥१॥ पवरस पहिली कुंती। मृगावती वनमाहि। पुत्र
संघातइ परिवरी। कुंसलखेम छ श्राह॥२॥ चउद वरस थी का गमिलइ। मृगावती सुकुमारि। वधतनेत
मुं फरसा रिषउ। कोन दीठ णससार॥३॥ हियडा मिलवा कुं सकरि। क्यों घाल्यां हि। विरह सइं नेत्र विलो
किवा। साजी वइं वन माहि॥४॥ मंत्रि सुगंधर ते कि करि। राजकाज सहुसंपि। सतानीक राज कथयो ५

मिलण मृगावती भूप॥पा॥ कुंजरा कुं मल आपीया। आपा डंबर अनेक। सील संतोषउ सीलइ गा बाहराय
विवेक॥६॥ रूप के दह सुणि नीम डा कि रमु ऊनइ उपगार। बाटि दिषा डि आ गइं च्यांक न। जिहां ते दिन्य कुमार
॥७॥ ढाल आठमी॥ वांगरीयानी जाति॥ ॥सतानीक राजा चल्यउ रे। सेनानी लेसाथि रे। पारधीया छे आग
इ चालि नृनाव लउरे। मारग तो रह्या थरे। ॥१॥ पारधीया। मेरइ मारग का आगूआरे। मेरइ परउप गारी ए गुण
कुंमा नि सुरह मानि सउ फन उपगार रे। पारधीया॥ आंकणी॥ कुंमा नि सि उ फ नु पगार इउ रे। देह सिद्ध्य नी कोडि
रे। पा॥ कुं देइ सिवा हेना वहर थार। कन कर कुल न दि मेर। पार॥२॥ कुं देइ सिवा गा म्य वन वारे। आ त्रण
अति पर धान रे। पा॥ कुं देइ सि ता जन अ तिलनार। कुपरि फाफलया नरे॥३॥ पा॥ कुं देइ सि तोरी नारि नइ
रे। नितर न बल्लो व धरे॥ पा॥ तुं देइ अरणी नारि नइ रे। धरि सुइ बीति विद्या धरे॥४॥ पा॥ आभलि चाल्यउ वया रे
धीरे। पूकि वाल्पउरा अरे। पा॥ मारगि सोण सल्ला कुं वारे। आणे ह्यों गिनमाय रे। पा॥ तिल कर की धइ सा म्हउ
मिल्या रे। साम्हउ पुरु प्रधान रे। पा॥६॥ वेद तणे न इ वेदीयइ रे। दीध आसिखा दरे। पा॥७॥ तेरी नाद
मिल्य रे। साम्हउ संख तिनाद रे। पा॥८॥ रासिवा धा मिल्या वलदीया रे। ए वलीय सवा ही मा वरे
पा॥९॥ पूरण कुंभ सा म्हउ मिल्यउ रे। ए दर पण दरसण था यरे॥१०॥ पा॥ दी वी ल्हा नी आय णरे
११ फल दीध उ कि णी आ णि रे। ॥१२॥ पा॥ निरधूम अगनि सा म्हो मिलि रे। सुखुण पत णा आरमा णरे। पा॥ सपुल
तोघोड उ मिल्य उरे। १४ गकुं दर सण श्रीकार रे। पा॥ आयउ॥१५॥ त्रेस्या दी वी विलगमती रे। मच्छ जुगम अति
सार रे॥१३॥ पा॥१० पा॥ फा वइ कुपरि बोलीयउ रे। जिम एउ छरतनका स्वरे। पा॥ मादल लीय रवाम 6

लातनीरे। डावी दिवि रसालरे॥२०॥पा०॥ मारग माहि छगलो कुवरो॥२१॥ मी कालिका बाचरे॥२२॥पा०॥ दहदीयाह
बीदा छिणरि। २३ तीतर बोल्यउ साचरे॥२४॥पा०॥ स्याल छवा वलि सावरहरे॥२५॥ वडसेर डे वाजरे॥२६॥पा०
डी मणना हरकत स्यारे॥२७॥ दरसण मयल दिसाय रे॥२८॥पा०॥ नीलि वास नीर पावो धायरे॥२९॥ मोरकी ध
य करे रे॥पा०॥३०॥पा०॥ सुवणा कहे सगला मिलीरे॥ मिलस्यइ सुत्र कलत्ररे॥३१॥पा०॥ सुहम तन्नू पगनावि
लजरे। मलयाचल वन पासि पा०॥ चंदन रूष विरूछ दिसइरे। परमल महकै नासरे॥३२॥पा०॥ आठमी
ढाल पूरी थई रे। सबहु नै अधिक सुहातरे॥पा०॥ समयसुंदर कहे हिव कहूं रे। मलयाचल नी वातरे।
पा०॥३३॥ सर्वगाथा॥१४४॥ दूहा॥ सीलवती सुत्रिणि नृपती। मलयाचल वन एह। बालक अति जि
हां बीहना। दीधउ कांकण तेह॥१॥ चंदन रूष घणा छइ। परमल घणा परधान। जोगी लपटाणा रहइ
जोगीसर जिम ध्यान॥२॥ पवन कंपावइ तरु नमइ। ते जुकर इंप्रणाम। आस्यागत आयानणी। विन
य घणु करणाम॥३॥ कोइल टहुका करइ कंडा। मोर करइ किंगार। स्यागत इव वहइ जुजुआ मइ। तरुया रुप
तासु विचार॥४॥ वाउ इसा तिल वायरउ। छूटइ ई विरही देह। विरहानल व्यापइ घणु। सालइ अधिक
सनेह॥५॥ चव दवस विरहो मयो। दीपक दहइ मइ अप्रमाण। बासी नो जूरु सवणी लडी। सुकमाल नक
आसुअ॥६॥ तू काइ थायउ अनावलउ। वलि आघेर आवि। तो लक रेसा बुलसी। दूहो तापस आ
सीस म॥ सुकपायी नइं वे पिते। बालीक रहे समभा॥७॥ फूं जाइ सिघ रिमा वरइ वे णि लिजि निज ना
रि। आसा सव दीव लही। आसा फल तउ अपार॥८॥ सलीपर वसु सीलनै। दीधा सीष नरिंद आवी ६

आयो घरे तउ तावलउ। नारी नित आणंद॥९॥ सर्वगाथा॥१५५॥ ढाल नवमी॥ सुगुण सनेहा
रे मेरे लाला॥ एहनी ढाल॥ रूप आगलि निरषइ वनिनीरे। तापस आस्रम पहिरंगीरे। अंबु कदं
ब चंपक कणवीर। अगर तगर नालेर जंबीरं॥१॥ नाग पुनाग सामगंजसीरं। ताल तमाल अशोग
उसीरं। त्रिपमूल सिंचन वकुनीरं। कोकिलना दअनोपम कीरं॥२॥ मध्य अगम अत्र वकुकुटीरं।
वइगा तापस दृढ शरीरं। मस्तक के सजटा कोटीरं। तपजु पहिरिया मादृश चीरं। धारा पड़ नही सुस
तकथीरं। परपद्हनधरै एक कसीरं। वन फल खाइ करे बानीरं। केइ वास वका लिगम तीरं॥३॥ किय
वाले नहीं जिहा वहे नीरं। हरिमिग आ विन कल तानपीरं। पाफे नहीं तरु फूलसमीरं। तापस मवल
हटक नेहीरं॥४॥ मांडे करम वेधण जंजीरं। सव रिपुरण तंजण महावीरं। का पइ मूल पीड पकरी
रं। अदत्तु न महक कहसी ल आवीरं॥५॥ पहिरण सुंदर वलकल चीरं। वाउ ए वन फल पदम जीरं
निडावी लकधवरावन यीरं। तापसणी ननु वरण किंहारं॥६॥ एहवउ तापस आस्रम निरषउ सती
नी कन्या उ आमनि हरषउ। सेना वाहि रमू की पजु ननउ पसेनानी सुरहसउ कहतउ॥७॥ दिपिसेनानी
आवरि सण दवन। सीह आंकेस्रग। कीडे केर हवउ। मागन कल एकणा सुरपावइ। नयर निराश्म नहीं अ
ण आवइ॥८॥ तापस बोलेकर नीवारं। माणस जिम मृगला वरि सारं। देषिदा हिरणा करकड़सुफ
गे। नयण लुडा धरगाल सुरंगा॥९॥ एक दइसेना नावक इपट लिपरइ। सुकन प्रमाण मनोरथ फलि

स्पइं॥१॥ एह वंश्यक कोइ बालक दीवउ। लोच नजोवी अतिप्रय छउ॥२॥ सकल कला गुण लक्षण सोहइ
सुर नर मुनिवर नां मन मोहइ। ते कुमर कुंकर दिशाण त्रिणंद। वंदनणी प्रतिनय णाणंद॥३॥ किणही कारणि नेरी
सीणउ। तापस तीव्रधरे पिल पोणउ। एकंत तापस ते बालमनावइ। मीठव वनक दिसम फावइ॥१३॥ रूपत
णी वलि सुणि सेनानी। सुकनयणा नित बात एमानी। जो स्यां रूप कुमर सुं मिलस्यां। चात्यांपिण वनी नदीव
लस्यां॥१४॥ इम पबालन दी कउपद्धिो। तउ पिणडी मय गरू छयउ व छिल श। किणदी अन्न छिन्न उयादा
न। आणी ते हाकुकमर छइ मन॥१५॥ पहुता तापस किसही विमासइं। इम चिंत विगयउ तापस पास इं। ताप
स वरण नांम्य उसीस। तापस पणि दीधी आसीस॥१६॥ तिणी अवसरि ते आयो बाला तापस अंकि लीय
उ ततकाल। माहइं हाथ फेरू नसस नेह नित वइ वस ततकीय उनू पत द॥१७॥ कह वके ह नव पुत्र
रतन। जीवन णी परिकर कुंइ तन। कहइ गसांमी एह नीकेण मान। जिणए पुत्र किए ए सु विष्यान।
॥१८॥ नवमी वालक दीमइ एह। पिण ताम जनदी अही मदेह। समय सुंदर कहइं सुण उएकंत। ताप
स कहिसी सकु विरतंत॥१९॥ सर्वगाथा २७॥ दूहा॥ सुणि राजन तापस कहइं। एह आश्रम अभिराम
राम। व्रह्मचार तापस वडउ। विस्व भूत सिध नाम॥१॥ विश्वभूत ते एकदा। लंदिपु रुमन आदेस। ईध्मण
लिण गणी गयउ। मलया वल उद्देस॥२॥ तिहा एक दीठी कामिनी। सुरभागत सुकमाल। वसन कु
सुमस लप छि णइं। कुसमतणी कंविमाल॥३॥ रूपवंत ते रूवडी। जोतिम ढवर एह उनतपीनपयो ७
मुग्ध नइकिमराबीनती। तुजविण कुण आधार रे। रा। तुउ उक एं गज्जे बेलता। करता कां अविलासरे। पुर।
पयोधरा। कंचण वरणी देह॥४॥ तापस करुणा करणी। लेइ कमंडलु नीर। सुर भागत मेटण नणी। छांट
इ तास सरीर॥५॥ सर्वगाथा २७५॥ ढाल दस माछरीयामन लागउ ए हनी ढाल॥ अबला कविकल थ
ई। रोवा लागी रानि रे। प्रीतम सुं कीधुं। रोवती मृगीरा वरा विया। दुष देषी अममानरे॥१॥ प्रीतम मारनकी
धी माहरी। दोहिलउ दुष विजोग रे। प्रीत॥ सूरवीर हंसा रखी। कउ ऊपर अवलाना रिरे। प्रीत पोग रसनीया
पणि माहरी। जोम कपास न कतरे। प्रीत तउ मरतीत नकालक। विरहन सहतांकेनरे॥२॥ प्रीत। हर
ण छूट्य थी हिरणली। मूलीनमइं चल विमरे। प्रीत॥ बोलावी अवला तदा। तापस वचनए विशेष। इह
प्रीत॥ देद ते सुं कीधुं। बहिनमम करि दुष विदमा। कुं बंधवनउ कुरे। देण॥ नगर समो आश्रम अड्डी।
आवउ साथे मुकरे॥३॥ प्रीत॥ देवन सुं कीधुं। जिम छाथ र संघ नइं आश्रमइं। सीता जायउ अवतरे। देव
तिण परिए कुं अखनीप डिसइ वात सह तरे। दे॥४॥ देवण॥ वध वचन सहर षतेअइं। तापस संगत स्या
ररे। दे॥ सोल सतीय परिपा लिसुं। सफल तक मी अवतारे॥५॥ देण॥ सीले संकट सा किसी। टलसे वि
रह वियोग रे। देवण॥ सील इसुष संपति किसी। मिलस्यइ प्रिय संजोग रे॥६॥ १०॥ देण॥ वली जाए सुं
किस्यां सतलइं तेहनी कोइ रे। देवण॥ आगे पणि सुणी स्युं इसती। कहइ फरी जीव डोयरे॥७॥ देवण। राव
णमीतां पवहरी। बीवदीयां नइ सुरकरे देवण॥ रा। तिदिव सिरहीं सूरनी। वलीय कलंकन ते दुरवरादे।
॥१२॥ देण॥ महणरेहा दुष एक णएअ॥ प्रीत मभा स्यो भामरे। देण॥ राउ बोके निम नी समरी। पडीय विद्याधर खामिरे॥
मित विजो
ग सहता
नहीं आउ
तजी स
इं आस
रो इच्छा
लइ सुर
जन वंदे
म तीर
तिती रं
अवसरे
जा॥
७ लक्ष
८

अवलाब्राह्मीअपहरी।दधिवाहननीनारिरे।देव०सती।जयपांम्यउपद्मावती।अटवीझंझाकारे।।१६।।देव०।
घवदंतीसूतीथकी।मृगकिमअमतरावरे।देव०।। विरहविलापकीयाघणा।तिमहंकस्यानहायरे।।१७।।
देव०।।पांचपांडवनीनारिजा।द्रोपदीनामअंगमासरे।देव०।तसपदमोत्तरपापीहरी।विरहसह्योबमासरे
।।१८।।देव०।।गीतगाऊंनलक्ष्मणधरूं।हरमपड्यानरनारेरे।देव०।।सतीमनरमदासुंदरी।वनवे
डीनिरधाररे।।१९।।देव०।।वनमांहिमूकीएकली।दूषणदीधउकंतरे।देव०।।काणाकाबकलावती।।
पुत्रजिणउपडीविनंत्यारे।।२०।।देव०।।बारवरसधीमपरहरी।पवनंजयनिजकंतरे।देव०।।अंजणासुं
दरीतपसस्या।वनकायगहडुमंतरे।।२१।।देव०।।च्यारमाससंकटपड्या।कविनकीयातपजापरे।देव०
रतिसुंदरीअणबूटती।लोचनकाढ्याआपरे।।२२।।देव०।रूपमिणमोकब्रमाणिणी।द्रौमोरापसणी
हासरे।देव०।।नगरबाहरकाढीवली।रिषदातानहीरासरे।।२३।।देव०।रतिवल्लभनृपनीप्रियाक
मलोदावडखरे।देव०।।पछिअगीत्लपरनसपडी।ताडनासहीअतितिखरे।।२४।।देव०।।सतीय
सुभद्राअविका।दीधउसाधुकलंकरे।देव०।।चिंतातुरकाउसग्गरही।साहनणंदनोबंकरे।
।।२५।।देव०।।इमअनेकमादुखिपड्या।तउभुक्केहीमातरे।देव०।।इममनवालीआपणो।रा
णीरहीविलखानरे।।२६।।इमधीरजमनमांहिधरी।आश्रमगईरिषराघरे।देव०।।बहुलसूत
चरणनमी।मादेजोहीसायरे।।२७।।देव०।।चकवविसिरिपादिज्यो।तारकउलनरतन्नरे।देव० ८

तापसवतीआसीसदे।अवघटसाभवचन्नरे।।२८।।देव०।। तिणआश्रमिप्रियदंसणा।प्रमुषतापस
णीहंदरे।देव०।।देषिविनीतमृगावती।पामउपरमाणंदरे।।२९।।देव०।।सरसोवहडजिमकमलि
णी।तिआश्रमतिणनारिरे।देव०।मृगावतीलीलरहइ।तापसणीआचाररे।।३०।।देव०।आघर
णीकरहउतंहां।तेकीधुअन्नहूतरे।देव०।।पगपगतापसणीकरइ।परवरूआपरहूतरे।।३१।।देव
हसमीढालमृगावती।सूत्राअसुतकरमरे।देव०।।समयसुंदरकहइसांभलउ।आपसहुपुत्रतन
नमारे।।३२।।देव०।।सर्वगाथा२७९।। दूहा।। दिवसपूरेमासेभए।गृहअयाउचरासि।सुचलग्न
वेलाघडी।सुपनक्षत्रवेइपासि।।१।।तिणवेलामिरगावती।जाम्यउपुत्रप्रधान।हरषबद्धिसिरवविव
हिम।तेजपुंजरविसमान।।२।। ढालइग्यारमी।।तमराना।। जायउपुत्रमृगावती।पुत्रजायउरे
गायउआणंदपूर।राजउपुत्रजायउरे।तेजकरीअनुदीपतउ।पुण०।अंधकारगयउदूर।।१।।रा
जपुत्रजायउरे।सबदुखकरेउपसामा।पुण०।तेगाववनसिरिगीत।।रा०।।सुधिरवांसतेवालवांसुलजी।।
पुण०।।वाजइमधुरउदरीत।।२।।राजउ०।।बांध्यातोरणतापसउ।पुण०।नवपल्लवसहकार।राजउपरक्स
मविखेरतरुवरकरे।पुण०।।वइरुणेजेकार।।३।।रा०।।आणंदकलरवकोकीयां।पुण०।।पंखीनि
कुंदिसिजात।राजउपुण०।सरववधाईदेणकुं।पुण०।कौणउतउडकपेति।।४।।राजउपुण०।मरुमरुतीमि
लीतापसी।पुण०।आणंदअंगिनमाय।।५।।राजउपुण०।तापसमनमांहिचिंतवइ।पुण०।सुंदरीजइसुत
सूतिकर्मकरइतेहनइ।।६।।जिमपुत्रीनइमाया।।पराज ९

ना। मा॥ राजा०॥ एदखंधइंआकासकइलीसुणा० ... णीआसिरामा॥ १॥ राजा०॥ देवबालीयआ॥ पेणी
णादखिण॥ एदननानेकपिमाभांभवरसंगीनादिककरनाकलापकमला। तेरुसबनामयएणा। रूपखस्त
मंनासखाप रिणामानावेकमुत्रसुग्री। नीबामाद्दकायणी॥ कदयारासाधिराजाभयं॥ ११॥ देवबाणी
सुणीदवी॥ सु०॥ दइनतापमछिनकाररा। राजा०॥ सुणिराजा नएसुननणु॥ सु०॥ उदयनदीर्घनामा॥ रा॥
रा। जा॥ तापसीपखलावीडानव। सु०॥ मोसामीसुपकंदरा॥ ०॥ देनएवषडदीपतव। सु०॥ बीजननएक जि
मचंद॥ ८॥ राजा०॥ श्रीमस्तरनिकराविद्या॥ सु०॥ सकलकलाअस्यासा। राजा० अश्री सकालनकरख
कसुत॥ सु०॥ प्रमद्यंभंतरूपकास॥ ९॥ राजा०॥ वचनंमनदेवदीकदनउ॥ सु०॥ मांडकलनयुद्धरा
सीदसरनमादरखसदा॥ सु०॥ मातकरहु विरुद्ध॥ १०॥ राजा० किणतापसद्य सभकीयन॥ सु०॥ रत
कवापनितरूप॥ रा०॥ श्री सिनतीतारकंआपणा॥ सु०॥ पत्रकलत्रसुमाउ॥ ११॥ राजा०॥ नानतीवा
लीसां नली॥ सु०॥ आकरसापा भनिटोल। रा०॥ लक्षणएदसुरतना॥ सु०॥ नषमडवापकांबोल॥ १२॥
राजा०॥ नानभमीपखावामणी॥ सु०॥ अ तिनभक्त्थयनएदा। राजा०॥ सिमानससस्हिंसलग॥ सु०॥ म
मरूपरनिसंनिह॥ १३॥ राजा०॥ मातादिकवारीकनइ॥ सु०॥ कीधनआमरूनेमा राजा० नदीदषु
निजतानमनइ॥ सु०॥ नदीडीपं नामीम॥ १४॥ राजा०॥ आकवाल्पठकनावल॥ सु०॥ बापनीधायवेग
राजा०॥ विश्वएतमदंडाई। काल्पसकरइदेग॥ १५॥ राजा०॥ कंराजमनिमयनतिम॥ सु०॥ उदयन॥ ७

नामपवाल॥ सु०॥ एहनीमामिरगावती॥ सु०॥ निआविस्पइननकाल॥ १६॥ रा०॥ विरतांतसुणाष्व॥
सु०॥ सतानीकनरनाह। रा०॥ सेनानीएनइ प्रमकइ॥ सु०॥ उलथउआरणिउवाह॥ १७॥ राजा०॥ स्वमन्प
कंकिनपन्यक॥ सु०॥ मुक त्रिभुवनमकडनडा। रा०॥ जसमुकुलमंडणकुलतिलउ॥ सु०॥ एहवउपुतसं
न॥ १८॥ राजा०॥ रूपसणइबालकसुनइ॥ सु०॥ वादपमारिवउ। रा०॥ आ विकआलिगद॥ सु०॥ बापस्णी
मुरवदेन॥ १९॥ फरिकरइवालनदनइ॥ सु०॥ उतानीकसुउवाप। बीजउबापमानुनली। रा०॥ कुम
बडडक्श्राय॥ २०॥ राजा०॥ एपणिदालइमारमी॥ सु०॥ पराव्यडमिलउवाप। राजा०॥ समयसुंदरकह
विवकइ॥ सु०॥ मृगावतीमेलाप॥ २१॥ राजा०॥ सर्वगाथा॥ सु०॥ ३३॥ तस्वडढाआवती। मृगावती
निकनारिडीलइअतिघणंहघली॥ तापसणीपरिवार॥ १॥ करफलवलवकलपहिरोण॥ निरयंनी
निकुकंन। किंविद्युकेवियुसारिप। सकापदीउरत॥ २॥ राजारांणीदषिकरि। मनमांहेचीतइप
म। लाधउत्रिभुवनराजमह आथावापुरिमादिम॥ ३॥ सर्वगाथा॥ ४॥ ढाल॥ समीराग मल्हार॥
नेलणादीनीवाल॥ विनवइएउतानीकराजा। नाकुतेकरि। मुषकदेषाकुंकेम। राणीनइरा० विया
गइहुरसएकलीमनन। रपरननपल्यो नेम॥ १॥ वी बदीयोवालमस्मरि मिलइंडीवनार। सुवानी
पकडआस। जायनइप्रीआसादीधलोर। वरसमनइवेलिमास॥ २॥ वी०॥ धिगावनीर रदीमुकवि
णडीवतीर। तनउमुगनीवात। गरसनीपयांपणिरामीआइजइरादांसनंदणवजानां॥ ३॥ वी०॥
जमी २७

षमावउ

सेतानी० संघातइं राजा इम कहइ रे। का अवरांणी पासि अपराध० अणमिलतउ माहरउ रे। अयलाकरउ
उल्लास।।४।। वी०।। सेनानी० प्रमावइं अपराध पाद नमीरिरांणी दीअइं आसीस। नवलउ कहइ डउ आपणी
कंत नइ रे। पणमन कुतहा रीस।।५।। वी०।। अतिघणा० कुंतना तह रंग रही रे। मुझ वीसारी मणा। आपणी०
अमोलिक थापणि वासरीर ति तुझ रहुं कण।।६।। वी०।। नृपति नइ० सुणि सुंदरि वुझ वीनती रे। किम
सह्या अपार। तेह घ तेण त्रामइ इक मन मांहरी रे। कां साम कर मार।।७।। वी०।। वीन घइं वी० सेमानी
सुणि मोरी सामिनी रे। निपट नदी जइ हैह। पीनम धी० उघ्धार उ आमणइ मणतइ। आज मिल उमसने
ह।।८।। वी०।। त्रिगावतीरांणी प्रीत मनइ मिली रे। कुम रिनइ आघ तेहे। इम कहे कुंमी मुझ मनमइं
कंतरि। नदी तरक्क एक रेके उ।।९।। वी०।। एतु कण० नद नम कलकता निलउ रे। ब्रह्म समूलप माथ
कुंवनि श्रद्धी जरव कूरतीर। इक सुनदी ती सुमया इ।।१०।। वी०।। पुत्र तं उकल इक उत्तरक तित्ताथल
उ रे। वाप नइ कंरिपरमाम। गुनकंपा इकर तजइ सुमिलवा सणी रे। तेतउ मूकि तकाम।।११।। वी
ण अनेइ पनीयो संउरूप तिनी इमि मंरे। वडभाग्य गउ अरंग। आणंद प्र० पण सपरीवार ति घण नेरे उ
णंगतरग।।१२।। वी०।। वीनवइ० नरसर विस्मय मनइ रे। मीट अभ्र नपगार। वा० एनाइ कउ कुंकेती
हतणी रे। कीधउ कुल उधार।।१३।। वी०।। वी०।। तापस तापस० कंस सुण उमारीतंण वंरे। इरवपु
न्यप सूर। अथवा उपमा मीलन नेरे। कुपहो हुण गयाहूर।।१४।। वी०।। सकुंमिली सव० तापसपति १०

तापसपति नायाइ नम्या रे। कीधासीप आणंद। मुनिवर उ दीधा नृप नइ रे आसिका रे। चिरजीव अभिचर
नंद।।१५।। वी०।। बारमी रही ल सणी मड इम घर इ रे। प्रगजी आंतव कुंजम। सघला उ थम। पाइ मकट
सविट स्या रे। सम सगुं पर कह इपकम।।१६।। वी०।। सर्वगाथा २४७।। दूहा।। सिनासिमली सा छिलो चा
ल्यो निरोध्यो राम इ उकलतय रिवार सु। निज नगरी मणा सज।।१७।। वी०।। खरवी तंघी अति घणी सि
ता नीक निरसी कर। आयो घणुं उ नावल नानगरा संमा निकी का।।२।। मृगावती लिअवी यति। कीसं
बीनबराय। दीधी वेगवधावणी पांम्या कोडि पसाय।।२।। सर्वगाथा २४३।। ढाल ममरमीरागसारंग।।
कोसंबा नाढाल।। बागा जांगी ढोल डैमषी। वा० आयां कोसंबीके रंगढीय ग।।१।। वाजा वणियदे
उ किसषी० वा० सेघनणा वलिसवद सुलवणा। बागा नालकं माल। दैसषी। घरि २ उछव रागव धवणा।
सिणगारया सविछा हैहसषी। सिंग तालय प्रवर रूप रिमाईया वाध्या तोरण वा। हैसषी। सिंग लंगली
पहलविछाई आ।।३।। पांवरि आपाट डाइ हेम सषी। वा० साझान रपसंते साहीमता मइ करतमातगढ
सघीमप क्रचा साणिक रिपरबनदी मना।।४।। सिरध रिपुर णक्कं तसि० साहसोदह।। एणआवइसल
पती। गोरी गावइ गीत हसषी। गो० नारि विधवा आपणी रूपती।।५।। हयगय रथ य खार। वेम पीठप
मे अिनुगधर सोह अआवीय उ। पदमार उकरइ मारंइ हम षी० सेंदरसारो नगरमां वाजीय गाइ।।६।। प्र
ए:मा: नृपति पाइ। हैसषी० पूकइ त्रिगावती रांणी। कड मुखी। राजी छत्री थात। देसषी। रा० मुक्ति मंत्रीस
र

अविचल जो आडुगो पहनी । प्रतकल तपरवीर । हे सखी
प्रसि जावइ रूपी ॥७॥ राजा न इकहि पसायडे श्री आणदी तो लाला क मेव करइ । मेह ताणि खिवाडे
सखी० जो तोप धारया मंत्री कुवरइ ॥८॥ सतानीक नरराय हे सखी । गणि मृगावती इ दय नकेवरु छा
या नगर म झार समर्थ० श्री जिणदेव रत्ना नगरी सुंदरु ॥९॥ चंद मुषी वदी जो पि हे सखी । का व इरा जा
न इरी णि भ्रम सु । पराजा व हनी गढे सखी । राणी जे आया कुसले षम सु ॥१०॥ सूहव दी जे आ मी
हे सखी । दिट नला गा० दम नइ के इसनी ॥११॥ बहु उजतन षतइ रंग मदा० पालेइ स नानी कराउ पहु
रसु छोवि निडा आवा स हे सखी० आ० राणी मृगावती पुन्य प्रेम हरसु ॥१२॥ एक दा कष्ट वा नी टाले ह
सखी० नाही सुण तां लागइ तेरसी । समय सुंदर कहइ एम । हे सखी स० पूरज व ग्रहम खंड ए थयउ
वरसा लय उर कोम्ह हे सखी । तो इक कोसंबी कहइ गहगहयउ ॥१३॥ सर्वगाथा २६६ । इति श्री मृगाव
ती चरित्र । ताइ वृंभपुर गा । तापसाश्रम ॥४॥ वर्द्धना तु कोसंबी नगर । समागम मनइ वर्ल
ना ना मथ ग्राम खंड । संपूर्ण ॥ सर्वगाथा २६६ । ढाल ॥ दूहा ॥ श्री जिन मुक्ता लसु रासरु
सुलिमा राग्रादास । म्रजनश्री लस कपको । मत पिण नहीं प्रकास ॥१॥ उदायीनम न माहर न रक
इ व किमको जेइ देसी । संस उपरु करा गिरागा मन ता पूर्व ठि नकाम ॥२॥ परनीए कम इ पंदी य वा
म गार म री टम झार । मह मांग पत ढू गर रत्ना द्व मन्न ने कश्रोधिकार ॥३॥ तिणवक नइ मइ ग्यार ह्या
समरय मालिक जाणि विशीर उरवन्म इ माहि ज । उशीध्र पाडिव मा णि ॥४॥ राग रामगिरी ढाल प ११

एहिली रदपर्व नी ॥ कोसंबी नगरी नउ धणी सतानीक नी महिमा घणी सबल पडूर संपाल इ
राज । एहवसमान नहीं कोइ आज ॥१॥ आइ नम्रा सीमा लहपाल । वैरी ना सन्या ननकाल । तेहु धन
प० सबल आकर त्र वांकनडी कि आद्यी मान रन ॥२॥ मृगावती नारु कुलवयणा । प्रथम जो गया वे
दोषाण लाषीण उली धन सोला गमा वे उछी ज दयासुरंग ॥३॥ छोवही दान पुषीया उद्दर दान पुन्य
पिण अधिका कर सु: कर तय किरिया आदर इ । पालइ सील सदा मनि मइ ॥४॥ श्री राधइ श्वेक
अरिहंत देव । सधासाधतणी करइ सेव आप इ गुपतसुपात्रइं दान । पिडूत गार न कर अभिमान
॥५॥ साहमी नव लि माहृ पिण तणी । सगतिजुगति रोलि करइ घणी । धरम करे श्रद्धा वधन णन ॥
एणिव तराग धरइ स्थितिघ ण उ ॥६॥ रिद्धि ये निइ नकरइ गर्व । साणइ सथिर धन तं सब । कुश्ल स
वधकारि मन तिम उ । न रुप पीर लज्जिस उ ॥७॥ क्रोध मान माया नइ लोभ अधिक न कर तां न थे भी
मा डमडा णिवारइ तेह नइ । धनि जिके जी प इाद न इ । दाएह वी धरम नणी । वामना चित्र रइ जीव
न इ स्था रथाम नी । राजा रिद्धि सौभागवती था की । धरम तणी वान अधिकी जिको ॥८॥ धर्मे अर्थ अ नव
लि काम आराधइ प्रिय अनिराम । सतानीक नइ मिरगावती । सुप्रोग हइ जिम सिव सुरपती ॥
॥१०॥ बीजा पहनीय छि ली ढाल । राग रामगिरी० बहु रमाल ॥ समय सुंदर कहइ मत फल फलो । उर
टान वाण सवदसोल लेउ ॥११॥ सर्वगाथा २५ ॥ दूहा ॥ अन्य दिवसि तृप एक दा । बहुउ तसवा मियो

रि॥ रि॥ तसनाप तिम त्रनी॥ कुमरि नाडंप रिवार॥ शक लाठंनको नेहवड [illegible] ॥ आ
गलिश्रावली॥ वावा लाग नवीण॥ २॥ नालडवारूडयापरी॥ कुमर रुडकाज॥ भाफि रकुमरि नडं कानड
रिको॥ तानुनमुंकरजोड॥ सर्वगाथा॥ ८॥ रागमा[illegible]पीदालवी॥ रिपरावमाराहा एहनातलि॥
गुदाम मवाणवंईहो॥ सुणतमधुरसुनिवाणकी॥ मिलीपलकलाकोईहा॥ उदाण॥ नदयन [illegible]
कला निस्त्व॥ संगमिराणडहो॥ वाईवलेखा पणी॥ सकुलीकथ पाणडहा॥ ३॥ उदाण॥ गुणीयण
गुण रुणश्रावलि॥ गुणनटदिसाडहो॥ कुमर रक मायुणश्रागलडं॥ तिणवीणवजाडडहोय॥ ४॥ श्र
राजा चित चतुरसीयन॥ वलेर रुपाहा मत्रीहा मेपकट रागपश्चावहड॥ नलीवाहिव तथहा॥ श्रानिवा०
राकसंसार सीधणु॥ तिणमाथोधुणडहो॥ नदीसमुंडमें नू कनी॥ जोणिमिरधगहणडहो॥ ५॥ उदाण॥
तनलीवन मिरहुणना॥ नाकनाटकमोद्यादेव॥ रुपरुपवनकपजीया॥ सिरपंकरुमोदडहो॥
॥ ६॥ उदाण॥ नदिायराजन :- मोहीस्या॥ निकुलमांचिनऊधाडहा॥ जोगीसर जोगध्यानसु लोणजी
वरमाडडहो॥ ७॥ नदाण॥ नादकुमगमीहीस्या॥ पवडजल कमलमाहिहो॥ रिसिकसमकुपमकरूला
करउ॥ पिणनावडवादिहो॥ ८॥ नदाण॥ नादहनागमीहीस्या॥ तेनारूया फिलघरे वोनकंदेना रि
गदवना॥ वांनामावीलहो॥ ९॥ नदाण॥ भुरवीदवतलउकायन॥ सेपकानन दीधाही॥ मद्धिमोलन
मेघनूणना॥ वीणारसवीधाहो॥ १०॥ उदाण॥ राजाइ कहसुणमहो॥ एश्रवरिसदीसडहो॥ श्राडकला 12

नदिणदवी॥ किहां विस्वावीसडहो॥ ११॥ उदाण॥ एहकलासीषी॥ किहां मसामारीरंलीहो॥ ए समय संदरक
हश्रासणी॥ रान मडहो नवीडहो॥ १२॥ उदाण॥ सर्वगाथा॥ ३४॥ रागमल्हारवायतत्रीहो॥ गीतारंदनी॥ क
मरकहिकर जोडनडं॥ ताततुमणाचमननेह॥ वीणातणीउतपतिकहुंडी॥ किमसंपामाण्ह॥ किमण्हपामी
तिमकहुं सुणि॥ मापडमडरापीठाउ॥ नीलनडकोकणवडरुपण॥ दानश्रेसयणादीधी॥ नंदवनाईनगमुग
धा॥ पाडवणमीडमकहडं॥ तुम्हिलगउपुरवभिवमाहरउ॥ दोहोलेडहगवगंधा॥ १॥ नागडकुमारकहेदेवनाश्री
हूहांलदीरविचितूप॥ उजदयाणादेपिया जी॥ कीलउमापननर रूपा॥ सापनीकीनरुपनदिनगनील
किमरीमकडं॥ उजद्याश्रधिकीदीचिरीस्य॥ विद्याधरममदाडकडं॥ विद्याधरमतणडवसाचडं॥ रापा
मिसिश्रतिलो॥ अतिमवलतसंपणापताकर॥ णाक्स्याणमय किनरत॥ २॥ इमश्रीमीमदेईकीरती
बलिकहेना गकुमार॥ कुडरतनापानालमडजी॥ मुकनगरीबहसारगपा नालनगरीकुकनलीवड ते
अकुमर पधारीयड॥ निउपायकवलपविनकीजड॥ वचनएश्रवधारियडं॥ मतिकरनेनिफलमिश्रमारी
एहपारथना महीं॥ मुकमयनगरीलश्कनरदेवनागपरिकीडहीं॥ ३॥ दीवानगरीश्र तिनलाशै॥ श्रम
रावतीश्रवतार॥ तिहाचतापतिहाघणत्रहा॥ मादलनादाकार॥ दीकार माहलनणावाजें॥ वनीमवहना
रूकपेड॥ श्रपछरा नावडंप्रमराचडदिवदक्षणीमुड्ड॥ तिहां राणिमुरुनडं मित्रसतो॥ सगतिउगति
करीघणी॥ तेवातसिगलीकहीनसकं॥ मारराहमित्रतणी॥ ४॥ तिहाउकमानामांनरा॥ किमकसी

कर्मक्षा॥ किं तवियोगकुपापस्य च जी॥ तुत्र न ता न दु पण्ढ॥ पुत्र मण अन्मपप्रगवलीनस्मि तग्युरुप कु
तिका॥ कपाडि मुकन इत्तुरम सक्व ज्ञामा क्रुती श्री धर्मसिद्धो त्रीतारणी मुरुवी तथापी दिवनामी एसदी॥
मनवुकं पन ह्ल मधम शावन कुनमतं विवेद नदी॥ ५॥ चरणमनमा मई मातनन जी॥ अनिरुमी मुक्र मातारण
कमगपि तापाइ नमीनी॥ वीन वस्त्रापणी वात॥ आपणी वीनवुया नमकि॥ एक मुकुक परिसदी॥ नइखी याप्त
त्रवियोग नु जनइं टीया पञ्चगाथण॥ दिवपांच मइ नवर मिया मिमु आयण नधीनम मुदा॥ अनुक्रम इन्या
दान इ रविविनीता॥ न किसि सगली मयदा॥ ६॥ वलि मुणि श्री महावीर न इजी॥ सइं हाथि पां मिमिदीध न्नेद
नाग्रमणीमाध्रवा॥ सीन्निदनी पालि मिमीपा॥ निदनी पालि मुमीपसधी॥ धरिमनिरमल ध्यानए॥ अपरा भवक
पवमा वनी नेल किम केवन न्यानए॥ मनाक्षा मुरुनइं किंवारइं॥ नगतिहुँतीर वमदा॥ इमकहा नागइ
मारधुकनए॥ आपणा वामइ मुदा॥ ७॥ मानमइ वरमिलंभ मिल्या जी॥ त॥ तजा मयुणमनइ॥ धीण नानत
पतिकहीजी॥ मइ नवन्धामलिनइ॥ अम्ल्याग निएक ही नतपति॥ वीणनी विसरपणाइ॥ मासली गङ्गा॥
वड्डरपिन॥ मतानीक इ मुंनणाइ॥ कुंभन्य करु मइ पुत्र वन॥ मवलडास मीनाम॥ गामम था पुरुन
कंदनी जीहा लमइ घरा॥ ७॥ ८॥ सर्वगाथा॥ ८॥ दुहा॥ ९॥ मतानीक वलि एकदा॥ वरकामनइ मर
वेश्वन आविमिंघासनइ॥ वागामयलनरा॥ १॥ कान कंदलकलकहा॥ ए मस्तक मुकुट रसाल॥ आन्नपरि
न्मा॥ अतिनला॥ तिलक विराजि मनाल॥ २॥ निक्की पारावामसवन्ह॥ मिघाड खरवन॥ पामइ पुत्र पुत्र मरीया 93
नदयनकुमर विविध॥ ३॥ मनमलमना आगइ कुणीम मेनकनपालामंदनी कवलिमंत्री॥ कादीनहकौं
टवाल॥ ४॥ कोव मेनापति सवी रिमश्रनागरकुझ॥ वग्रदरीयाव नरामयादिम टमांनरकुल॥ ५॥ मनना
सुधरमां माविडिम विद्या मानइन॥ विव्रमयन दकरनिवा॥ मतानीक मुखकं द॥ ६॥ सर्वगाथा॥
रद्द नारा कमहरा दणिद्रा निदाल॥ गर्दारिविंधीकरी॥ मवलवस्तन्न्रालि मानंर॥ मृगमंगडी वीलीयन
नहीं कोइ सरूप मानीर॥ ७॥ मतानीक गरव कम्यामा साबन कि रहयाहठ कारीर॥ मुकमारी पाय गंकाभई॥
रिद्धन लानइ पारार॥ २॥ मता०॥ वाथ वगर्दा ताधका॥ लाज्याधाननेपनर॥ इमाम्नरगमाटरडं॥ दवाके
इनलेखोग॥ ३॥ सब॥ मद करनागडिम निक॥ करनाग लगरमाराव इंदनाइ नदीणरवा॥ च्यावीराजकुंअर
र॥ ४॥ सि०॥ रथपाइ कपिपाओन घण॥ न लिकारार नेधारार॥ रिद्धि घणी रागमासरडं॥ कुंमाटनमागिरे
॥ ५॥ सित॥ ५॥ कचणवमननदी माहर्ड॥ कदा वाणीना कोइर॥ हसपंदमदी किदो॥ अथवा मांनननाकोइर 07
॥ ६॥ स०॥ मतानीक मइकानगाइ॥ मृण राक्त नमनिलाईर॥ कामान्त्रीजे गिण्दवन॥ स्वरुमरिधक
टइंदर॥ ७॥ स०॥ मनवकि किमकरमाहिनी॥ गरु भाटपिया जीणार॥ नुरूमभमानु कोई नदी॥ रिद्धि करीरायरा
तीरि॥ ८॥ सि०॥ वसनन युमार इन्द्र अमन नदीवी जी वामइर॥ तेन निकेमि किलनामण मिस्वसुथ नलिम
पामइरे॥ ९॥ सब॥ हनवीलपदिकनदवइ॥ दमपरदमनजागइर॥ दिवसुगण कविनती॥ नुम्ह कन्द
न परमातिर॥ १०॥ स०॥ वसन नइम्हारइ जेन्म वइं॥ तेन दीवी जीवामइ॥ तेक जिकामरिद्धनलान्तरव
सुवन किमपामइर॥ ११॥ स०॥ पिणपाल्इं नहीनाहरइं॥ वणविना मन्नावासार॥ तिमनकंपत्रोजम

तिमस्त्री नाण वामुपनधरइ ऊडामतेरे ॥११॥ स० ॥ पुष्फ मे परसासी दना मइदीव न वित्रामेरे ॥ इं इमा०
नं दपिनडा ॥ दवानदी किण गमनरे ॥१२॥ स० ॥ आप विमाना वानस्या ॥ डाण इं वित्रामतद्दारे ॥ लिखव
किती कस्त्रह्न तउ ॥ अवस्र वमरनत्यउ नखारे ॥१३॥ स० ॥ कैतमरी गग फागमइ ॥ ववधी ढालरसा
लनरे ॥ समयसुंदर कहरा वने ॥ वटपट थईतनकाम तईरे ॥१४॥ स० ॥ सर्वगाथा ५० ॥ राजा नव
थन मुणी ॥ अमरस आणइ रमा ॥ वित्र सलानद्दा मांहे रइ ॥ इत रव तव नकम ॥१॥ अति माननि पान
वा ॥ मन नीक मुविह्नो प ॥ चितरा मपटी के दनइ आधिक नन मझडंदा पुं ॥२॥ उरत चीनारा तेहा
राहा कीय तउ कीम ॥ मयस्स ना मुरु चीतरउ ॥ वातन रउ मरम ॥३॥ त्रीरि वालागा वतुर ॥ चितारा नि
ध्या नित ॥ इण गटापा यकरतन ॥ मुस्न सरु प वि चन्न ॥४॥ सर्वगाथा ६९ ॥ रागपरनीयो ढाल पन्चमी
रातडीया रमे ने किहा थी आवीम त्री एहना विरत ॥ सकल वातारा मांहे सुंदरू रे ॥ निपुण वड के
न नाम रे ॥ राज महल दीधउ एहनउ रे ॥ वारु कीधा चित्राम रे ॥१॥ चतुर चीनारे रूप चीतर्यु राज्या
महलनानी तिरे ॥२॥ च० ॥ चवद सुपन पढिला चीतरा मोरे ॥ चीतर्या आवमंगली करे रामसीता
रूप वली तिर्योरे ॥ लपमण गंग मुनि ब्रह्मा कीरे ॥३॥ च० ॥ वनारि वानर हनवंत चीतर्या वरे ॥ कैहनी लावी
मवे ॥ रूप वि पत एन तल लिख्या रे ॥ माटी दाटी मृव राधा ॥ च० ॥ रूप लिख्या रावण तणे रे ॥ दसमाथा
म्हाइंसरे ॥ दस गव इा मङ्ला थुमइरे ॥ रावण ना ङरग उतु वीसरे ॥५॥ च० ॥ ईसरन रूप चीतर्या
अरिसथा वण रुउमाल रे ॥ सेंद कव्वतागंगा सिर ॥ त्रिपनवाहन कंठ कालरे ॥६॥ च० ॥ रूपत्रस्ता २४

तणनतीतरू तरे ॥ वत्रु मुंप वट नडरालरे ॥ हाथ कमंडल ज्ञानन्मुनिरे ॥ जानोई तण मा तेरे ॥७॥ च० ॥ रू
प लिख्य नत्री हुसनतउ ॥ मुरली मनोहर स्यामी रे ॥ संघा दो वक्ला थम झरा वन्नु सुनम्र लिख्य निमानरे ॥८॥ च०
चक्र रिसनवयद नीतस्या रि ॥ चीतर्यो गोसन नइ रूपरे ॥ पटमोटा मिलि गरुड नणारे ॥ कदि रखा लकमर नूप
रे ॥९॥ च० ॥ लाल नडनार रूपधीची तस्या रे ॥ एक नक्र गा महिजा धरे ॥ गनिल पडंफेल नरु उनात
खीवडु दावक डोडरे ॥१०॥ च० ॥ गरुड मयु मुक मानिकार ॥ पधीरूप पत्रम नर्कारे ॥ निपुण चीनारडा सम
होदा तस्य तरे ॥ वारु जाण विवक रे ॥११॥ च० ॥ मृगा लेका विमलीम धीवान स्यारे ॥ मृग गता चीत्रोपिर
माथ मोटा पाघ नर मणरे ॥ न जाण इतीर नायरे ॥१२॥ च० ॥ रूप फिरंगी को धाफुटगरे ॥ मास्र माथ छटाप
रे ॥ टीमाप हिरइ छे थाणा को छल्लारे ॥ वेमाघकर ब्रङ्कापरे ॥१३॥ च० ॥ नवसत्रीत स्यानाव ॥ निधाणी
रा पाफुरवर णपगणरे ॥ गरदासूद ना कोजी चीतस्या रे ॥ वावता कतिन के लागरे ॥१४॥ च० ॥ पंचवरणा
साचत स्यो रा नीनुमापो लि पुकार रे ॥ नतुर चीतारा जाणपणे छणुंग नीना ॥ स्यामकालप्रकार रे ॥१५॥ च०
निपुण चीतारइ दानी एक दोरे ॥ मृगावती नाणा डंड वर ॥ वत्र अंगूठ मरपी गव गलीयारे ॥ कांति कलाधिते
सु तेरे ॥१६॥ च० ॥ तेहने अनुसारइ सिंगलो चीतरयउरे ॥ मृगावती नउ रूप रे ॥ सकल कला आणी
केलवीर ॥ कीधउ तउ अनसरू परे ॥१७॥ च० ॥ रूप नीर नारीरा ॥ नीण भरसा थानतिया मसिर्दिरे ॥
तुरत चीनारा विलखो थयउ रे ॥ एह रुण नइ रूप सुंदर ॥१८॥ च० ॥ श्रीकर वाने धि दफो सीयत रे ॥

वलिपुन्यानिमझजनबहुरे। खलीवीनारहूरकीयतेरे। एहनतअनर्दमदकर्मेरे॥१५॥ढ०॥डमवारत्रति
हापकहेयमसिनतेविंदेतामरे। नतुरखीनारतह्नमनीनबडरे। मनिधरीपरमविवेकरे॥२०॥ढ०॥रागी
साथतिमदीकोडसडंतिलतेरा। एहपरमारथपहरे। मुकनहूवरटीटानमीटहूदवतारे। अन्यथाथा
रे। आथोहरपरतूपेरे॥२२॥ढ०॥मृगावतीनूपक्षीकरीरे। विसमयपहीनरस्यंरे। मगनथंयमहू
माहायनेरे। वितमअनेमनजायेरे॥२३॥ढ०॥वारुरखीतारापीगीनाहरीरे। वालधणुथकमालरस
परस्हपमहाहनीरथलीरे। पातलतुमुपअणीयालरे॥२४॥ढ०॥वारुरकारीगरवानातावरारे। पं
घरगीनवरंगरे। डरमरोणीरूपवीनरूतउर। थोमावीमिसुलंगरे॥२५॥ हाथेरपन्दिरावतेमोवन
मांकल्पारे। कोमकल्हेवगमीमरे। नगरवीनारीमाविवमोकहरे। एहेमनहजगीमरा॥२६॥ढ०॥
त्रिपतिनपामहूपदपतउरे। करहत्र संसाकोमरे। डगाहरेनारी। डमीरे। कानदोश एरीओमरा॥ढ०॥ सं।स।
अदेहरवीणमंदरपणउरे। अहोरत्तालरमालरे। अहोरकामकारीगरीरमातागालरमालरे॥२७॥ १६
अहोरंनअभ्रणीयालमो। अहोरअहरपवालरे। अहोरनेविजनासिकारे। कवकमलनतनाल
रि॥२८॥ढ०॥अहोरब्रम्हाघणतर्खारे। कदवतकमितगनलाकरे। नासिमंहलपिंा कहेवेग्रा
कोमहेदीहुणमडवकरे॥३०॥ढ०॥कथनरागीनाणाजोवतारे। मुरतदीवततिलतनहरामूफवि १५

विमाकोजाणडनहीरे। राजापत्रत्रसेदेहरा॥३१॥ढ०॥ एकिमहाणडवीनारहरे। मदीझा
कीधमसगरा। कामंडकोडलनीलवीरे। वपिलिषीफूरुअंगरे॥३२॥ एवीनारीजोवनमरलच्या
रे। कायतसबलअन्यावरे। अतवरविरालीयरे। किवएहनत्रघरजाइरा॥३३॥ढ०॥नीत
मिथुणराजाडमकरहे। पारदारिकमारहदेविरे। एहअतेतरपडतउमादरहरे। एहनडमारि
वत्रविजापरे॥३४॥ढ०॥रायरवीनाराजप रिकोपीयउरे। कुककमकरहदिनकेमरे। टालपांचमीरा
गपरतिथारे। समयसुंदरकहहरमरे॥३५॥ढ०॥ सर्वगाथा॥१०॥दूहा॥ राजाआतिकोपहत्र
आतिवलीवादिनिजाप। कपकमकोमतवंमलमहं। एहमहालीचोदि॥१॥ सुरनवंफालहं
नरूनत्र। माथतमूंथ्यी। फाल। रामनकपरवाडीयआमसिलाईमुपमाला॥२॥ माथहमूवगावीन
लनोगलनीवनीगाल। आगलिवाजूडकाहली। वंमहूसबदेसयाल॥३॥ टठोरउवाजहूव
करी। आणीपाअलीपामि। वीनारातपअगलहं। आविकरहअरदासि॥४॥ कामअपत्रतहमाह
यत्राहा किमका। सडणम। विणअपरहूडहवारतनुविणामहकेम॥५॥ डराबार निजघरना
ही॥ वंतननहूउपमान। उतमपरकामडनहीं। मनविकारधनजान॥७॥ दोमनहीउडणहवे।

वरदी स्रुतकरूपा। कथा रते नोकरी। सुबच्च वाम बनक्ष॥ ८॥ रायवी नारमंते लीयउ सोलाम सकर्वेवा॥
वेसस लोपहिरवीया। व ल्पगमरगा व टेग॥ ९॥ राजा ह वनमा। व कहि तडवर लोध वे कर्म नियुगनी
नारनउ मकवड। जिम पांम्यत्र कटडे तेहा॥ १०॥ सर्वगाथा १०७॥ ढाल अहीवउपईनी॥ मुणिराउ नं
वरनी। नतपतिदिवमा हिमाटी वड वसि। एक दिवस कुमायन सांभलि। निज मामी मिलवा नउत्हति।
॥ १॥ मामी नय णाकउ धव तो नेविश्राम करस्यु विचित्र। मांडि टानइ कुमाधि कउ संनद्ध। डोवा कन
इनदीढइ॥ २॥ नगर मांहिकरइ विश्राम। एक दिन कुमार धन जाम। मामी रावाला गोध गुल
दूधी कोगानी सुतणु॥ ३॥ कउ मामी सु णि पुत्र निदान। इहां वडं कुमार मा कर स्याना। निस वे
सवाई जरकम्पुर श्रिय नाम मदा परनिष्ण। ४॥ वरमवर मनेह नउपामाह। वीनरवनेनि मवे
अउमाह। नही नर जिरगो सिगलंगा भि। पछि मा ण समारइ वांम॥ ५॥ वलि विदुरउप मुडे वी नरअ
विगरवीनारअ मर वेदनह। निण वी नारिमिय लेमिली। नाम रणी लेय मिक्स टकली॥ ६॥ प्रथम मांन
डेरान विकही। नृप मग्ना नंनदन पिण नहीं। दरद मनोप गलन मवोह। मरण मम उतिम नदान
दीकोय॥ ७॥ बीनारा नासे ना जाणि। राम्न कन्यानेडा वी आणि। नाम लिपी नड वीगी कर म।
अंबिड नाम तिको वीनरड॥ ८॥ सिगल सुमिलन इमा नीना नावी जीपरणि का नविघा। दिण १६

छिणवरमेह सु आवे नाम। तेवी नार अकरइ विश्राम॥ ९॥ कुम्री नारीमा रइपवइ। ठकुरांत छ
ण नगरी अवडे। आढ नाथ गुरुवें धवलगन। आया तिण गुरु नइ उपघान॥ १०॥ मरु गाम नगरे
न सोसली। मामी न कहयो मन नीरली। कुंमा इम वधवनी वाम। विनाम करि मइक रिवड को मान
कहि मामी सुणि पुत्र अरलम्न। गुरुपिण कहि नाको निडुरन म्न। अंपि चिकुंमांडि अम्र किम पडि
स वसुवर्र पिण धुत्र तिसन॥ ११॥ मामसीक धुरुपानइ मनही। नपदव रूपडि मा इपिण मनही। मामी
इमसम म रूपा वीकरी। मरण सीम करण आदरी॥ १२॥ पेचव रणवा नाम लीया। नेला रंग माहिल
लीया॥ सपरीयाधी नीधी दाधि। परमेसरन जसमरण साथ॥ १३॥ मडकी भाव लिहिण उपवासा सम्न
नमे कुण मनुं तेऊपका मा। नीवाचे दन अगरक इर। अंग विलपन मस्यकड इस॥ १४॥ पछि स्पाव
प्रतसत परक इला। वलि मुपकोम कोमव निरमल नीजा पहर तिसुंदर वी नरी। नाथ स गति आति
दो नइ करी॥ १५॥ कर जोडी कोधीवीनती। वइकुपर संमारी लीधनी। इह जगमांहि मो टांडवइ कुं
म सकीम करूं किम सघ॥ १६॥ तउ पिण ताव नग निकलवी। मइ त्रिगाम कीयाउ रली। पमजी
मुरुडम पराधन इदोस। जन मपणम्यान करइ रोस॥ १७॥ सुकवीन नी सुणि सुर हरषीया। जिम
पहुई मुरुनें निरषीयउ। मांगि रवस्व उनुरु। लगतिस मीतइंको घाघरूा॥ १८॥ वरंघ इसि
वमु रुदेह। वरसइ माणसमत लिहि। नरमारण राव सम्या वाए। सलाहे वक करुण नेहार॥ १९

चित्रकरस॥ ॥ इतकदिन कंतदवना। अदस्थयवनतका ल।वीनारवदरषि नथयवागमनडुषडं
डोल॥ ॥ सर्वगाथा॥ पश्चारागमारू॥ टोलसा तमी॥ दूडोर दूरकधारगिरा ताताषदमिणीग॥ ढोल॥
मिडणवीनार गडुभवी नवदंर। वदरवमनकरूते ते। नणारनडंश्रणमा रर उडी॥ अवीसारनक।
॥ ॥ वालुंरम वाय नवरर कंमाहरनडी॥ आतानीकनीभुनथडि। विणचापराइड श्राकुपवीवली
डी।नकनूड कोकंडनी वेर॥ ॥ वालुंरण॥ वगनदीननतदहरनेडी। किनननमलंडसह हा।तिम
ननमूलूकामंबीधणीडी॥ नदीनरूनमननंधुफि॥ ३॥ वालुंरण॥ मिरगावनीरू पडरानाम। दोहन
डी।तेहनेनकरुंतमुनास। इमच्या।तोवीफूषवीनरू वडी। मिरगावनातणडमुखिलास॥ ॥ वालुं
रण॥ स्वालपटरूपलोनीयनडी॥ अतिकामीकढिवाय। नेसधणनश्रा कुंतहनवडी। रहइडोभन
राय॥ ॥ वाण॥ गायन कडोणीगुरुकनावलनडी। देपामउपरूप। नरनदेषकुपमी दायनडी
चेदर्शातवनूप॥ ॥ वाण॥ कमानेररा उडमकरूडी॥ हदोकाण रूपरमाण। मुपूरतिमन उ
रेवं दलवलजी। कुणकंटिलंक विचाल॥ ७॥ वालुंण॥ अहो काइजनेपमश्रपधराजी॥ अथवा
विद्याधरीकाइ॥ अथवा किंनरकाइकामिनीडी॥ नारीकदी रेनजाय॥ ॥ वालुंण॥ दूवडरचीना॥
रासावबोलेजोजी॥ मागडं तयाण गेदमानेकंहनवरूपदणनडजी॥ पकीधनचित्राम॥ ॥ वाण॥ क
हडजीमारनराडासांनलेनडी॥ रायश्रानानकिडो। नसमारा मिरगावनलो॥ नदनागनरूप
ए॥ ॥ वालुंरेण॥ मंमानवीपवीनरूवडी॥ रूपतणउ वलस॥ आपविमानापिणनवि। २८

सदेइजी॥ चित्रकरीसुविशेष॥ ॥ वालुं॥ विणमृगावतीमाहरइडी॥ अंतेउरमंदीसासाचंपकवेलि
तिनाकिसनडी। कानननमांरूमान॥ ९॥ वीव॥ ढाल॥ विनोश्रानिसीममडी॥ तनमगमायवफाके॥ वि
इमिरगावनीनारिम्रलो॥ सुपनोगवनसुरनाक॥ १३॥ वाण॥ रागमरूडोलसानमूडी॥ वीनारइलगा
यदेषमावंडवडीननइतवंकसीडी॥ समहमुंदरकोहडणम॥ १४॥ वालुंण॥ सर्वगाथा॥ ढाल॥
गमी॥ नथगईमरीतथांगईठामपढनी॥ लादेरूघोर्ककनइनवधनाचेदवधीतनचद्यनश्रलि
मान॥ ९॥ नेरीनारिमांगइरनारिमांगइ कहणीकाराय॥ देदवधीननमवतकहाय॥ २॥ नेण॥ ली
दूकंघनकायकहइ निरलीक॥ सुणिडा गरूननूडानानीक॥ ३॥ नेरीण॥ मृकवचनकहइवंदन
श्रीनामानिवचनमेरटीलनहीन॥ ४॥ नेरीण॥ प्रिथवीमाहिरननरूढाय तिमकांवणतागवइनहि
काय॥ ५॥ नेण॥ आजसीमनमडमामीजफाम्र ववेगीदम्रकेम्रफ॥ ६॥ नेरीण॥ डुलहमिननगाउयरव
ला॥ धणीयहूकदेनकरडगावान॥ ७॥ नेरीण॥ छाप्रावतीटनारिरनन। तेणकुपरिनयोश्रवमरउ
मन्त॥ ८॥ नेण॥ कोनहीमकडहतकडसाथि। नोश्रायादेपिमबतीनाथ॥ ९॥ नेण॥ मासुंतरवनदा
लडणोडार। नारिनवीमुगाकरडगोनिहार॥ १०॥ नेण॥ रूपमूरसाढीमांकडमाफाल। कुंगमाडुंगत
सुकफूपाडु॥ ११॥ नेरीण॥ रो मुकमांढ्छीमांकडगीषाणमारनडाडुंगावकडषाण॥ १२॥ नेण॥ इंडाणि
मंगरविपमारूकोलाटकुकरुंगावतिमालाकीघीव॥ १३॥ तिण॥ अंडोणिमनगमाहेगाकनम॥
ममेरविषमा कोलाटकुकरडगा वतिमालाकीजी राव्यकरइवरससा अंतेउरीम उमा हजी॥ पणसरुमइनहीअंतेस
म सांभली कांमातरथयउजी॥ राव्यकरइवरससा

सतानीकपिणकरइंडोरा।मृकककदइंड्व वनकगेरा।कुरूंदपिक्केंणइवालावलि डिमनवाफइंगाहा॥व
चटनराबाबाप्र।रायरमोक्रुगनस्वर।अतिबलत्रेवंतीनाद्ध।सउंलोयरअपणाणसाध्य॥३॥गैचल
घचपलजंगा।।गरूलापदेइ त्नगा।सानकोडपाकस्वर।रथलापरेडपहूर॥४॥वोलीयरयंऊरवोनटु
कंचाइविकुंदिसिहोन।सीमालनइंरूपाल।आइनम्यानेननकादा॥५॥व्रजमस्यादसमदंसम्यावीय
चंमनंरा।रजंआईयारविवंद।सलमस्यासयकुणिया।ह॥नगरीकोमेवीणासि।आवीयत्र्यायत्रला
सा।सबकंदडिकीधनदेस।लोकांआइमिल्यादेपस॥७॥केगयामाणमनागि।कूलद्यासरगमागि।कि
कीयामां।णसबंदि।कोधा।सवरतइंफोदि॥८॥धनलीयाकंदनालेटि।केमआढीमापृटि।इभपुरबा
दिनलाग।नसप्रमोडपविवाग॥९॥परनकटकनगरीवीटि।कीधीपंद्योतक्रुमीट।सतानीकमेकीया
ल।मनमकीमुंकीबोल॥१०॥गयानगरमाहिपडसि।पालिरूफीनइंस्थाबइंसि।लाककरइआरहेस्य
कादेवसकरपदेड॥११॥पदव अमरथदेहि।मृगावतीमृविवाघ।आपणउनिटइंरूप।दिगपयनामरू
प॥१२॥मृकरूपधीअनरथा।कपनगेहाबाइया।विकुंटिमइंवीयउगाम।पहोपलुतलीठंमठाम॥१३॥
धनभनारीकेदडिस्थनिकरूपकदेद।रूपीघणात्रइसदोसाग।नकपरूइदीठेराग॥१४॥सांप्रतन
ठीवडकोड।सीलपलिनसोढिलनइढाइ।नवियंकोपसनाप।लागडनदीकोफयाप॥१५॥ठीवदुवाइ
चवकहर।पक्षिमइंक्रगइंस्थर।ठीचलइंमेकमलीस।तेपिणनघंहूंसीस॥१६॥इणसमेंरदमाटेला। २५

५

।इनसा॥

पूरीमाइतनकाल्ला।गसमइंसुंदरस्वा।णि।डागिसीलंमाटनकूंणि॥१७॥सर्वगाथा२५५॥कोसंवीनगर
तिमइ।नवानतलकापात।अवरणकोरणकाभ्म।दमिकंपनिरधान॥१॥सहरूतउपडवृकपन
न॥नितरूपऊतांदेखि।सतानीकराऊइंवउ।सयस्नानमृविनाय॥२॥पेरसखलइसकोपद्या।सम
ठी।रव्यत्रनफ।इ।अनामा।२निडा कपनत्र।मिगवदुननघमाय॥३॥वलिणहामनचीतवइ।मरणन
श्रावनचुकरोगसबलव्याभवला।करपिणनमकेजफ॥४॥हाहाढिवडंकिमकरू।इदावामइ
दोरूप।अहांसम्रूदइदोगाकुल्ली।इहांरागइदारूप॥५॥वीनारअमइइदव्यन।निणएकोयाउदेस।
मेविवधनाम।न्यउनदी।मृकनूपननविग्रग॥६॥कोमधिमास्या विणकीया।आगइपडइविराम।
हाथघम्या हिवकुनदा।विगडीनावठाम॥७॥सर्वगाथा२३३॥ रागआसावरी॥ढालइणारमी॥
मृकनइस्यारसरागाकेड।पदनीढाहल॥ ॥विनाश्वरपियदेपिनठ।मिरगावतीकहइपणाठी।मन
गंमराणिनेआपणत्र। करइसबल विनाकेम सी॥१॥कफ डिसामारनपीनमआपणाउ।एसंसारअ
सांरा डी।रूनममरगाव दनकरा।उमतणवनतमारडी॥२॥काप॥पोलिरूदीसमालीकोटनीस्र
डचस्याऊरूर।अतिमवलतदयनकेसरी।दिनमातिरथइंरूसीयारनडी॥३॥काप।स्त्रूजमीनप
हनोनदी।गढलनसकइकाय।पद्योतनवादिरथया।निश्चनप्रियवेदायोडी॥४॥काप॥अमूनाणी
मनामतिकरइ।सभरनआवीनराग।संसारनीमायानडी।उवलमानवेरागीडी॥५॥काप॥डेयम
दिकोकेमनननदी।कारमउसगपणपइ।विहडतापिणविलानडी।तडकेपडेडिमनेहाडी॥६

रोहिलंउआरिइंदेसए।दोहिलनमांणसडंमसेजोगपुरुनउदोहिलउदोहिलउवली।जिनधर्मरि
॥७॥का०॥रमछिपनाणेकेहसुं।मनिआणिसमतानाथ।एवेरविरुआमाडंघणेउ।पांमटोडुणघसामी
डी॥८॥का०॥जिनमासनेजिणवरकह्या।एडीववनरासी।लाध।धामंजेत्रिकरणसुद्धसुंवीतरागनी
वइसालोडी॥९॥का०॥संसारनाकारणकह्या।पाडवापापअढार।तिहामहुकउंढीडीपाडे।जीना
रानह्वीमारामी॥१०॥का०॥नवकारमनमाहेराघउंपा।जिहांपनआपरमिठा।प्रीदसिवारसुनीवस्ला।
दिमनाएःसुपदीनोडी॥११॥का०॥धननानिपहरावनी।तिजरावीयजेनिजकोनरमाटाःखडमपारमा॥
कटयसमयसुंदरतेमाडी॥१२॥का०॥सर्वगाथा२४॥ढालबीःमीरा[illegible]।वितवेननहरी
पदाल॥ इलिकोणीमृगावतीरि।सरणाकीधाच्यार।सतानीकनंतोरनडर।परपवदिनमुपलाग
रे॥१॥करित्रिसुसरणाच्यार।अरिहंतसिद्धसुसाधेरे।केवलीसापीयाधर्मरूपल्लकनाधनंग॥२
कु०॥१॥नीपअढीमाहिदीपनारे।विरहरमानअरिहंना।तव्यक्षीवप्रतिबोधनारे।तिर्थंकरसग
वंतोरे॥३॥को०॥आवकेरमनवपडकरीरे।पक्कनामृगनिमकानिअडरामरपदवीलयीरे।सिद्ध
अनंतसुपकारोरे॥४॥कं०॥तनकिमहीकिरियाकरइरे।पालइसबपंच।आपतरइंपरकथरह
रे।सूधनसाधुनिरोयोरे॥५॥कं०॥तिर्थंकरदेवलापीयतेरे।जीवदयारूपधर्म।कहिसरणामन
जिइकरीरे।जिमपामोअइंमववर्मेरि॥६॥क०॥मावतपरनवसवलनेर।मृगावतिसंसारःपुनर्व
इसरणाकरीरे।सफलकरइंसंसारनडी॥७॥का०॥एसरणाबलिहीसुसारि।पामेनावारवा॥ २९

ऊनमहारणाछीबाफवडरोमवदपरतडणडारा।ढा।कणा।आणंदकामदेवकेहवीरे।आनकआ
कआवार।इंआरेसरणाकीयार।सुरपदनीलहीसारीरे॥७॥का०॥निरबंधजुगवाकुनत्तरमणि
रथदीधवपकार।मयणरेहासरणादीयोरे।परभवलह्यसुदसारोरे॥११॥का०॥इमअनेकसर्णाए
करार।साकमा।आनमकाडा।काउसमारतुआपणनेरे।मरणाकरकंनआ।डोर॥१२॥क०॥पामना
नीकसरणाकरीरि।परलोकपहुनतनिदं।बारमीढालपुरीथईरे।समयसुंदरकहडइमनं॥
॥१३॥का०॥दुहा॥ सतानीकराजाबिचडोतिपहुनउपरलोक।राणीधवा।मृगावती।नकरेउ
धीनमसोक॥१॥कंचेसुरिरोईनही।मकोयाधणाबिलाप।कणजाणोकिमकीततो।कमलागने
वतिपाय॥२॥मितकाविडाकीधीउरत।सोका।मोहोहर।सीलअपंकनपामनहीं।राणीनहसु
हूय॥३॥आडासीपरवा।मावता।रापअनडसीलेदाय।खुवकरिमविनदवा।जिमतिस्पइ
नहीकोइ॥४॥सर्वगाथा२६४॥ढालतेरमी॥रागधन्यासी॥ सीलघोलरसुधमोलमि।गावनी
पालइंसुधमाधवमइंलाकमिगला।तयकपतनाढालइंरी॥१॥पाछि॥चंदप्रद्योतनकुंवरी
पघउबाहिर।वेटमेंग्रामनहोई।नटयनकंमरखिगानतारोणी।नगरमाहिमकुकोईपी।२।सु
सीलपूलावडसकटटल्हइंसिगला।सीलमदासुपदडी।वालस्तननापाकुडीपहि।सीलनवति
षपाहिरी॥३॥सुण॥जुगपधानजिनचंदसूरीसर।जिनसिंघसूरिजसुतेदि।वाजनसहरनेपाद 2८

॥२५॥ सकलसंटसुइसदेरी॥४॥सुण॥तेरमीठा लेग धन्यासी॥सुणतां आणंदथाय ईबीजावंक थयतरमहर्ति॥समय सुंदर रंगल गावइर॥५॥सु०॥सर भगाथा २६॥ढि०॥ अष्टं समाप्तः॥इस॥श्री
जिनदत्तसूरि गिरमाने॥ढिव पगामुं नमुपाय॥श्रद्धेकर श्रावक गथकी॥सुगाड भाव करि वाय॥१॥
कातीतो सविं तो गिन॥विजपाल बावन॥नाभिन वडे वीजनी॥लोक कहे धनधन॥२॥पंडवीज मानि
जिकली॥तिमश्रीकमलसूरि॥तिमनीकल्कर स्योतेष्ह॥पुण्यमिपूम तिमंध्याव॥सावधान थई मंत
लव॥कजितीस वद्धिबवन॥धीरपांसुकुन विमिल्पा॥रम रूपवडी स्वजन॥४॥गगसारंग॥मल्हार
पदिलव्रणांमकन्ह डिमराय॥सीलमारामनी टाम॥ढिवकमिरगाव तिनवड्न मोडनइ मोलन
पृकडोकेम॥वद्वायमकुमर पिणलकाकिलव॥वंद्रवद्यो तनसबल सखेम॥कोरपिण कोडवास्वन
टो॥सप कहंबो थायक्कसमण तेम ध्रुधिकाडल्हदोकेलवव॥सीलरतनरहज मावनतेजेम॥१॥
के सीलहू डीयरिराफसु॥कसंपुरीला वनइको जिरवाथ॥कोरणीकदयणबो नीयड मुक्त्य॥
मसतदिहि तलहाय॥केप॥सा॥॥आंकणी॥वीत घडस मन्हगावतीनारि॥नवरसवीलत्तरां मुचित
२॥वानेमिगत्री मियवीकरी॥सुंकजिहिरानवा मिश्रपार॥रायकदस्यानइ सुमणा व॥करजधि
गावतीवी नतीअवधारि॥कुंवकुनइ छविवमासरडार तिश्र्यथि॥निकुकेतनसर सार॥३॥केसा॥
सुग्ग मृकुमदन संगकुवालव॥सुकुरयणहव तिनहीगालानात्॥कटकापास हनही नदयत॥ २२

जिम मागस बलनकारणवालमबलविनासकपवनी॥सुकदृष्टांत कहुं नागइनयाल रयणायर नि
वडइ दनइ॥निदन अदनिवनायडे न तकाल॥॥के॥सी॥ कुमररयणाकुमर श्यव वाय॥निकुमावडनि
गाडमाय्रकुमाबाय॥मोक्षवगही सीबलवडाघालीकरु कुमरनलवाय॥नारूनवतिनमाहरूपु
मनमिल्यां अनरके मंगिलडे॥कुमर अदयत कर नमाहिस्वी॥वलिकहानकरु हायतुपाय॥४॥सी॰
नारिकहइ दुइ गयरदो हर छत्रपदस्त्रावीजगतइहर॥कुमरकूपर कहव क्रिमकु वड॥मायसु
वा कहनइ श्रातिक्रूप॥गारुदीमाका मेबगालव॥किंतेकरिया वडदांनेहव हुत्तरि॥५॥डकुडिहांनलाग
नेहह्या॥कुमरमइकरवण कवारमहूरा॥५॥सी॰॥कुमरतमाअयदातिवाकाजि॥कोटकुगवनं
संबीनगराज॥वीककणीइ टकुंडपिनी॥नातंगाल्लातण कंरवतिमाकुं॥अंमनेकाश्वगनगालय
लश्चाडयांगजाबइनानि॥पुथमकुरामकोध्यावी॥केकंडननयामकेआकुंका॥६॥सी॰॥बंद पयो श्रावंग
ननमांनी नेवाम॥कलटानआलठांगनमात॥इनिकापावंमाकल॥मिवकला कपरगमजात॥इद्यो
मास्कि कमनि॥कडेगर्भटश्राणि दिनरानि॥मनकायन विषमतनाबलत॥कामीमरकर दान्माम
न॥१॥केप॥बलिकमनेतमिगलवकीय नमेव॥मिल्लानागी श्रवदयांगमान॥इतिकानिद्रामाक
मी॥वांगिकदी दिनकापतसंध्य॥मारीकडे भिरगावनी॥पणिसांमनी॥नारिनजवेचमालयदिलाव
रीह॥लमथसुंबरकडुडमकुपरवेष॥७॥केप॥सर्वगाथा १२॥ इह॥ढाल१॰ कमखरकेता॥नमुंकी
सुविलासारा झानवषह्यानमइ॥नारिसगावनीपासि॥१॥वुरनजायइकनीकोया॥सुणिरांगसंदेस

उम्रनइगडाल्हमकरकेनगरकुंजोणिनरेउ॥आमहनकवोणफुल्लीलिभुंफवबास्यनामपालपादइनक्षी
क्विवमुफश्राविदऊँ॥आसरोगघाथा(रोगनकीदानुपदीआनी॥गीतनी॥ पनीयाकदइसुणि[illegible]
कापुणिमुवचनगऊविमर्ण॥आनीवारआश्रावइद्रंतीनकिसनराजावकरु॥[illegible]मनाविमिदपवनी॥
जिणनीबग्रपालनमीलरे।रायचंदमुडझोमनी।बोलनीधाजिणआवही लिंरा॥२॥धनण॥अन्यदाराक्रे
२ सहोदनन।कागदसिरधानरहायरे।नरनारीनिदीठनवमोलानदेलैकिंहांसोयरे।॥धणा॥परकन्या
मागइसही॥एसअलगयारे॥तिरापरनीकोमागइनही।इणकुणचवुाची॥कनीतिरा॥५॥धणा॥अतिसि
मवितकी।लिकाराजानीनगईजाइरे।वेरघाफतिजलमलवइइ।पिणआम्रनिरमलकोइरे॥६॥ध
काल विलंबकरणनण॥मुईकोटकरायतणरे।नघघ्यानथयेचितकनलेउलागनीनितका
लीदहेरा॥७॥धण॥चंदकलंकतिलामसा।अथवासीलीनादागेरे।किमही मायेनही॥तिमवदउ
छीतनीरागरे॥८॥धण॥त्रकमांमीसांनत्यानहीं॥नागनीमणिकेसरकेमरे।तिमसीलसतनिन॥अविके
लम्केलवकेन्तरे॥९॥धण॥इकिवइतीरजाइनेमाहरेवचनेकविवातरे।अकलीणपणत्रनश्रो
टरूपउमनमांविश्रामनकिमरे॥१०॥धण॥जोवंघइमुपआपनइ।तउपापथकीमनवालरे।नहीत
रनोकाकुपीसनी।नांपरयइउकनइवारनरे॥११॥धण॥इमसिगलीसीपसीलनी॥इतिकागइराजा
पालिरेकही।वातसतीनी॥ध्ययावद्पछीतनिरामरे॥१२॥वकमुछीतनचीतवइ॥हाहाहायघसवि २३
लघाणउरे।पालमधीसीसहइकउतिहवनपिणकंपविनाणउरे॥१३॥धण॥इणनारीमनिवेतम्यो॥॥

अहो॥बुद्धितणइपरपंचेरे।गदविपमनकरावीयनविदनोपिणनावइसंचेरे॥१४॥धणा॥मुफनइमानपा
हिम्मनरूपनी।नारीनटिरासीनेटिरे।उमनिंताकरनोमन्त्रनसमकावनेन्टेरे॥१५॥धणा॥कोमकी
धउतनीमथो।हिवसोनामकरनकोइरा।अन्यायकरेतो।कारिकनीमिद्धिनथायेरे॥१६॥धणा॥हुणा
वनीपिणतिणमनय।मिगलोसहूकोधनकाटरानोमानीमांग्या॥मननवदराजाकरइचोपरया॥
॥१७॥धण॥गावर्सगमगमांसोसलउ।वलिपरीयाकगीरानिरावीसीठालपोली।समइमुंदरकहइ
इनलावानंगा॥१८॥धण॥सर्वगाथा१४॥ दुहा॥ हिवरांणीमृगावती।दीवमुसुनइरतेयाणदेवी
रश्रोतिमदेसी।भक्तिमागरिमानिय॥१॥नव्यनककमरमुलपणना।तिनयवतनमवंनाराताषाति
लम्पीयन।वामरश्रनअधरूनना॥२॥मंनेमनानीउपवंमाण्यनातनीगेमापालइनाउपइरस्पुंनवं
यनराजानामि॥३॥मनीमनोरथइमकरइ।हिवयुरुटम्यानवदिगाइांतिणवरश्रावइउरो।नउ
दीक्षालेवेगा॥४॥णकमनारथफाणनइ।बिहरंताअरिहंनसामीश्राविमसामसन्या।मक्षानीत्सा
वं॥ता॥५॥सर्वगाथा३०॥रागमुफ॥ढालनीहीं॥नलगीअरिहंतकदवनडालीयईलइही
ढाल॥इणअवसरिमहावीर॥श्रीविमसोसमसरे।कश्रीवंयनदमटसन्धाणारकुंसाधपंपर
वस्यारि॥कसा॥०॥नगरकोसबीवही।नकश्रीतिदिमनाटकंगकेश्रीय॥समोसरणतिहाकोनकेर
पद्दीलउरइन्दरनव॥२॥रकतवमसणिसार।करम्इनिगडोलननेयारचन।सिंघासनपाय

प्र॰ द॰ ॥ मस्यासरबोफिनडाकुंलबिटालहकोमोजी। परदारानेसेविता॥७॥ मवरूपकयुनेतेमत
जी॥६॥ स॰॥ केविरम्यापरदारथी। तेसाचानरसीधोजी। परनारीगंध्यानिहं। नामनलहै कोअधोजी॥
॥७॥ स॰॥ वीत्वबनमनमडधरी। दृष्टकनडन्यांदेसवजी॥ संसारम्रसारवडाकोविवडदिधालना
जी॥८॥ स॰॥ चंडप्रद्योतनतन्नारुनत्र। दाइअनुमनिछिनकामाजी। मारगचूकामागमां। लज्याश्रा
डुवीमानजी॥९॥ स॰॥ श्रमालयुगलाणीकरी। राडनगइमनरंगोजी। नदायनपोलइघालीयग॥
हनतकरजाशंगोजी॥१०॥ स॰॥ घरिस्थ्यावीभिरगावती। दीयइदानउल्लासनडा। श्राफनरमोटडं
करी। पक्कुतीपञ्जुनडंपासनजी॥११॥ स॰॥ वीरचरणवादीकरी। पेवग्रमटकरलानजी। प्रनुपा
स्यमनीयन। टलीमिन्लामनमोवनजी॥१२॥ स॰॥ दिक्षादीयसंणप्तणी। चंडप्रद्योतमेनायजी॥
श्रागावताः पुखस्राबे। तिणनज्यासमारनजी॥१३॥ सीलप्रनीसरअङ्कतम। तिणप्रतिवाधावार
जी। एकडकणपीवसडाकरताचापश्रधारोजी॥१४॥ स॰॥ विषयथकीविरतीनही। पांचसइनी
रतीनारीजी। पापकीयाधणपापणी। दुपसहपश्रपारोजी॥१५॥ स॰॥ पांचमीढालपूरीथई। मिगा
वतीग्रहीदीपाजी। समयसुंदरकहइ ढिवघली। दीहसइ दिमसगातिजी॥१६॥ स॰॥ सर्वगा॥
॥१७॥ ढालछडीरागकेदारउ मिश्रसुलात मेरेमिजनीफकनीहाहा॥ सुणिमिरगावतिवि
दितसिष्यार। प्रकृकहहुवणीपातिनहरदाधार॥ सु॰॥ कुरतसदापानउडपामीर। हिवर्दनिम
हमगतद गामिरे॥१८॥ सु॰॥ कुडनीपञ्चीसहुनीमो हिलीरे। पिणएसाधनीवदवीदो हिलीरे॥ २५

पंचप्रमादस्युंमकोमोदोर। चउदहूरवधरपफननिगोदोर॥४॥ सु॰॥ पायदिलुंसतीमांहिरावीरमार। हिव
कहिसा धर्वीमाहि विजोधारे॥ सु॰॥ नाम गुणस्रागम्यान। वडहीबहरं। किम वरवांगिरम्रस्पीवचर।
॥६॥ सु॰॥ कांमना नम्र किम्यि। सितसुधसायंर। श्रधर्मद्वगानगर। पाडिर॥७॥ सु॰॥ गुरगुरुगतिनाव
वननलीपा। सोपदेवंतीजमनकापरे॥८॥ सु॰॥ पंचमहाव्रतसधापालज्ये। आहारबइतालीसदोष
टालतज्ज्र॥९॥ सु॰॥ आदरपिणग्रहस्थसुमगार। मकरसाहणथीवारननगरे॥१०॥ सु॰॥ कूडकप
टमनाणमायार। कहनामानाकहनाकायारे॥११॥ सु॰॥ मित्रनेमित्रकुं [illegible] सविया मतहवीजंत्वा
रसे नाणमायार। कहनामानाकहनाकायारे॥१२॥ सु॰॥ विनयवच
रुंच ए पारिरयारे॥१३॥ सु॰॥ त्रिणमगारि रियाधागरे। सुमनालावहस्रध आगडरे॥१४॥ सु॰॥ क्रोधमकरिज्यो किणमुंकोइरे। मारग
मडसदनाकरवसर। दसविधसमाचारीहेधरज्योर॥१५॥ सु॰॥ मानमकरजे किणहीवामईरे। जीवदयापालज्यो कहिदामईरे। छ
व्याम्तनावनडकोडरे॥१६॥ सु॰॥ मानमकरतेनलदइसोभारे॥१७॥ सु॰॥ बावीसपरीसासाधवी
सुणावलिहमकर त्यागनननानोर। तानकरतेनलदडसोभारे॥ सु॰॥ संयममेंनलेनारनिरवहिज्यारे। वेदनना
सदइंरा। अनडउत्तक्लिसटीयदणीरद्दरे॥१८॥ सु॰॥ संयमसिघाडमरतकुंपरीसा। नमबातानडमिरगावतीसुयारे॥
त्याग। साधमईदिज्यारे॥१९॥ सु॰॥ इमइसिखाइमर नकुंपरोसावे भवातानडमिरगावतीकरारे॥२२॥ सु॰॥ इदमइई कईपरियप
॥२०॥ सु॰॥ रायचनदानीगडइपुत्रांश केतसमतानीकरनजाठ त्रारे॥२३॥ सु॰॥ हितसिखामनीदालवबडीरे। समयसुंदरकहेसुणता
रे। साधनम्राचारमिळातनदायरे॥२४॥ सु॰॥

मीगिरि॥श्रुत॥सर्वगाथा॥१०॥ ॥ढाल॥ दिन श्रीवर्द्धमान तिहांथकी।कर‍इ अनेक विहार।एकदिवसि मिर
हैन ही।जिनवर न‍इ दिन कार॥१॥उदायनराजा थापीयउ।रांणी वचनइ सेण।चेडसुता पतनर।प्रपिला
पडनउ मगरक लेण॥२॥उदायनराजा आपणउ।कोसंबी नगराउ सुभराग।विसुमती गवइ।कर‍इ
अनापमकाड॥३॥चंद्रप्रद्योतन अपहरून।वासवदत्ता देन।इहां अधिकार बड‍इ अतिघणउ।तिण को
नइ ठाकाइ॥४॥जिमवाछरुअ सुगायन‍इ।वीनारद तिह विन्ना।तिम सुदीयन तिहुआमातन‍इ।स्त
रंता रह निम॥५॥धन वत्ता धन ते घडी।धन ते दिन वसा तानयणे निरषिसु हरषसुं।तिरगाषतीनिउमाना
॥श्रीसर्वगाथा॥२०॥राग आसावरी सिंधुनी॥ तिणअवसरि जिणवर विहरंता।केवलीप्या।नवकास
करता।कोसंबी नगरीउद्यान।समोसरया सामी वर्द्धमान॥१॥समवसर विरचइ तिहां देवा।चउसठि इं
द्र करइ तिहां सेवा।आगलि बइठी परषदबार।धरमवषाणइ प्रभु हितकार॥२॥चंदनबाला पिण तहु
करइ तिहांसेवा।आगलि पइवीचरषदबार।धरमवषाणइ प्रभु हितकार॥ चंद नवा लापितावज
यासि।चंदन आवीसमहित लीसइ।मृगावती पिण आवीसाथि।केवल न्यानली ये निजहाथि॥४॥
वृष्याल कवषामणी दीधी।उदायनराजा आसीषा।नवितघणउ नेह मइंदानदेई।बरमाना भाव
तेषलेई॥४॥जिणवर देरमणविनय करइ।वामरषत्रमाण आणावेइ।भिक्‍षा तोली समदवइ सइ।
तनमनकमलनयनवनतु विकसआ॥५॥तिम करदेवदेशपदेस।सुणानंसावा करम कलंक सुणि
राकुनसंसार अस षिडउनमडरक्‍षडमीतंतारा॥६॥विषयतणा पाप लवइ अतिविरुवा।सुपथ्यो जाल सु २६

उपदेश तिहां रुड्यासुषसरसव उपमेरु समाणा॥मधुविंद वानउ हृष्ट‍इ तजाणा॥७॥इम आनमावि तजा
णीराया।विषयथकी विरम्या सुषदाया।फलविपाक समाण कहीयइ।परतवड दुरगतनाडपनहीं।यो॥
॥८॥हां मश्रागार रहितने देवा।सूधासाधतणी करइ सेवा।किवलनाणि नसूधउ अधरतासम कितरनन तण
न पतरम॥९॥जिनक लत्र अरघतहिमर णतेण।एक दिवस निर निहवेमरणउदवेर थकोई साधन
आवई।पापकरी पर सवह पपावे॥१०॥कांत्याकौनन तणउ अमरक्‍षत।वारवचन तउदयन प्रतिभत
आदरउ आश्रावक धरमउदार।आपणे सफल करयउ अवतार॥११॥तीजापदनी सानमीदाल।प्रति
बुध नउदयन भूपाल।समय सुंदर कहे सातनतउसार।हिव अकंचे दस रिड अधिकार॥१२॥ढाल।
वेदस रिहा तिणअवसरइ।आयासूलिविमानि।वीरजिणेसर वंदिवा।सावत गति बहुमान॥१३॥
वावीसी एक्‍का।दस अछेरे समगा।केवलज्ञान पवक्कवा।महावीर उवसगा॥१४॥गरनदर णमहाव
रनउ।तिहांकेस्त्री वेदा।श्रीवीरषद्विलदिसणा।निःफल थई एतेइ॥१५॥किसनइकपिलनमउसुण
इ।संघेतवद्दरणउमरमा।ढरहरिणी नरगइ गया।इंद्रगयो सौधर्म॥१६॥तन किसरी अवगाहना। अ
वरसउतिवि।पूजा पवई असाधन॥१७॥असमजणवसिद्ध॥१८॥तेसु विमान उद्यो तकर।बारमाय अभकार।
श्रीतरंगर द्युतमायउ।पर्तुदसणा प्रकार॥१९॥सिरगावती मनचीन वे।उदायनधुन्यपकूरा।आवक
तलेमां काला।माघपविदने सर॥२०॥त्रिभुवनना यक वीरजिण।हाथ षसोहि पसीम।इंद्रकहइ
हूतणउ।ध्रा।हमी विभावास॥२१॥सर्वगाथा॥२०२॥ढाल आवमी॥ रामबंगाला॥ साधवी हिनचं २७

चंदनबाला। चिकविमिथैरां [illegible] गुणमाला। तापिणकांतो संकटे लाभ रहना छिवना। रइ लेला॥४॥ गौर
वां दितिहांयी कजी। केवललाधि गनिसमूह॥ मिगाणी प्राहती बिकुंसायो प्रदक्षणा पाधर। तिजह॥५॥ ७
साधवी भ्रमसाला आवं॥ पडिकमणनी विधिवाई। पडिकमणा [illegible] नमा [illegible]
पंडी॥७॥ तीहालाकबइ वांदीवा। पी [illegible] समणला मारां। गास्या [illegible] मीडी। पडीरानि नकवो
ताही॥७॥ दिणअवसरसूरिजवंदा। प्रणमी [illegible] विदा। पामी [illegible] दाणा [illegible] बिमा
न लिघदा॥ माल नतिणपसलाअंधारा। अकासे दीसहतारा। काइ निरतिनही दिसकेरा। [illegible] ति
स बलनोधि॥ ६॥ सयमानघइमन माहि गुरुणी नइ कोधइ नोहि। गुरुणी [illegible] साधवी कोइ। [illegible]
ही सिगलि [illegible]॥ ७॥ म्रिगावती मनि निलपाणी। आनमाकयरथी डाली। [illegible] मसाद्य मइकोध
उ पहिलु जनप्यो गनदीध॥ ८॥ एकस्तोके [illegible] कथाक। गुरुणी बिणकं [illegible] जाउं। [illegible]
का लिमसधि। गुरुणी नइ किमघ तिबोधि॥ ९॥ [illegible] साधवीरा नी॥ नीसरी निसमारग [illegible] नी॥
डायती [illegible] नटेवा। आयने करु गुरुणी सेवा॥ १०॥ आपणा [illegible] अपराधरव मावुं। गुरुणी पायसीस
नमाऊं। [illegible] निसाबी। साधनी भ्रमसाला आवी॥ ११॥ [illegible] गालो। गुरु
णी मिलीयंदनबाला। [illegible] समयसुंदरकहे [illegible]॥ १२॥ सर्वगाथा [illegible]
[illegible]॥ चंदनबालानिणसमया। पडिकमणउपरिआर। [illegible] समसुविचारा॥ २
[illegible] 27

वालासाधवी। म्रिगावतीनइंदयिादीया। [illegible] गुरुणीवली [illegible]॥ सबगाथा
रागधन्यासिरी मिश्र। ढाल नवमी॥ जीनी [illegible] मुनारमोहंदामइ [illegible]
नीवे॥ मइंमी चेलावे नइ कीधा अपराध। रातिमाइ कुलकेली। मइंकीप॥ चेली [illegible] जाणुं
[illegible] केवली। मइंकीप॥ १॥ चेली बिनइमंदाकीनाणु। समवसरण [illegible] मइंकीप।
साधकानहीं आधार। [illegible] आपदा॥ मइ०॥ २॥ [illegible]
॥ ३॥ मइ० चे०। [illegible] मिव। चे०॥ ४॥ तेरा चेल णा [illegible]
वकजवगायो। मि० चे०। [illegible] जीवकी मि० चे०। नइसणी विरकी [illegible]
[illegible] मिव० चे०। [illegible]
[illegible] मिसानानइ नि [illegible]॥ ७॥ मइ० चे०। मुनि [illegible]
[illegible] मि० चे०॥ नवमढाल रसाल। [illegible]
[illegible] चे०। समयसुंदरकहे [illegible]॥ मि० चे० [illegible] गाथा १०० ढाल [illegible]
[illegible] गुरुणी। [illegible]
[illegible] गुरुणी [illegible] 28
[illegible] गुरुणी। [illegible]
[illegible]

इम वंदितव मइरे गुरुणी॥ इम थई नरनार आदेस साधु आवा सनि मंडले पीयवेरे॥ गु०॥ ... इस वंदत परमादे रिण॥
॥४॥ मि०। गु०॥ मइ गुरुणी नइ हृदयवारि गुरुणी। छिमा मृगकआवारे। दूषण सिगला अमा हर वरे गुवड्डं कि
मपामि मिपारे॥५॥ मि०। गु०॥ मा मा मा मिनणत अन्य मेरे गु०॥ मृग अनुसे अमरहरिरे। धन धन सा धन नंदसा
वलि गु०॥ पाल कुंन रेती वारेरे गु०॥६॥ मुकम्मनी वार लागउ लिको रे गु०॥ मिछामि दुकडं नेहरे हा॥
दूषण वी मही कहि रे गुरुणी। सयमि सुद्ध सुं करइ रे॥७॥ गु०॥ आव करम न उपयकली रे गु०॥ पडू
नामुं मनि निम ऊरि रे। मृग॥ ओडम अमरपदवी लहि रे गु०॥ धन धन श्रमण गुरे रे मि० गु० दृमअ अवरा थपमाव
मरि गु०॥ मृगावती वीनी श्री नेरा करम हणया घनघातीया रे गु०॥ पामा ते केवलग्यानरे मिरग गुरु णा॥८॥
लोकालोक ग्याविनी रे गु० तत विणवर निपदी मरे। जिम मृग मनाफल ऊउलसिरि गु०॥ निज कारज सम
रती वेरे॥१०॥ मि०॥ दसमी हाल सुहरी थई रे गु०॥ मृगावती खेव मारे रे। समयसुंदर कहे मांसल वेइ सुम
ती। छिवर्वदना नीवा नेरे॥११॥ गु०॥ सर्वगाथा रहस्या रहस्या॥ कालउ आपमिरगा वनी ध्यावनवंदा
उत्तथि गुरुणी हाथ ऊव अकर उ अमरती मुकौ अमेन सा॥१॥ सूती लागा घेदना। कहि वालानीएम
द्ववद्ध पगावांपनी॥ ओडासीमहकेमा॥२॥ हा हा वार घई घणी॥ मइ नवि चोधी इहां। सुद्दा पिण तुं छि
णु॥३॥ व लिसुव वेकहइ यहा॥४॥ किमेन इहाथ ऊव उ कायउ। कहि चलासुव वनी॥ [illegible]
दावउ म इं ओव न उ गुरुणी तुम्ह आसम मा॥५॥ ते किहांद्र वसुं वंदना। पउम्ह आगइ जाया॥ इंदम्हत २८
हीसाध्वी॥ उम्हत्तसण। किमथा सु॥६॥ उदणइ ओ लोकरी॥ श्रयवान्या नवि रोपा। हुंदसुनानि

नइंकरी॥ अवतिपान असेप॥७॥ सर्वगाथा रहस्या॥ ढाल [illegible] फाल्गुमी॥ रागरामगिरी॥ निंदा मकरिज्यो
कोई पारकीरे। ए देसी ढाल॥ धंदन चाला साधवी रे। अच रिजूपां म्यउ ए मरे। धन अहो मिरगावती रे
केवलपांम्य तेमेरा॥१॥ आपा नि दडस्यां। रिसनं नारि मन माहि करइ ए मनापरे। हा हा तें लंनाही
धामाडं घणारे। छुकनइ लागि मारे अवापरा॥२॥ आ०॥ गाढी निस्रवी। नइ ए हनइ रे। पिणहीं ला की धनही
रासिरे। ए मह समि टी माधवरे। मेवलज्ञ मा सुजगा मेरा॥३॥ आ०॥ तू दढ्या णइ सुरक तो मल्या रे॥
म ता सी मा छिम करे। केवल पिणवइ हिल हुन उरा॥ एउ न्म पव करम॥४॥ आ०॥ इम पिण नजे मा सरइ रे उस
श्री वीरवर्द्धमा न ... उल म ण इ वी मिथ्यणरे। मृगावती सात यठउ आन्नेरे॥५॥ आ०॥ इण परि खिमापत्र निंदती रे पुण
यह लीनग वेते। खवदन वाला पाप माय नूरा केवल ग्यान अनंत रे॥६॥ आ०॥ गुरु णी पावन पाम्यो मछर णइ
... जि उपगरो चिलीथी पद पांनी यइरे। वेदना के वलजोइ रे॥७॥ आ०॥ तिण समइ श्री महावीर डरि तिहां
... विहार रे। वंदना पिण साध्वी लीरे। निर गावती परिवारे॥८॥ आ०॥ चंदना मृडह मृगावती रे।
... ति मिकरा य विहाररे। आरे करम न जहू यऊ रीरे पहुती सुगति मझारि रे॥९॥ आ०॥ दसमी ढाल
... रा। मृगावती नि स्वारे। समयसुंदर कहे मो धन नेरे। सील ऊपरि बि सारे॥१०॥ आ०॥ सर्वगाथा
... ॥ ढा॥ उदायन नरनाथ नो ठउ। मा को मन नीमो हि। राजा गाज ऊ आसुध॥ व सइ सूक्ष
... धरम प्रतिपालन उ। डी एक्ल ... गृहवस्तीश्रा ... मसमा वरा सुधच जिण रासि नारा॥
... सा॥ कंवए मणि पासाद। पतिमा हाविन मो मिनी। मडप श्री परमा॥ ॥२३॥ 29

इम वंदित बहु रे गुरु रूण ।। तने ।। ध[illegible] तणउ अधिकार ।। नगर कोसंबी देस मइं । जिणवर ना विश्राम र ।। ४ ।। हीन
।। ४ ।। मिथ । सु० ।। [illegible] निवास [illegible] । मुदाय नम श्रावक व्रत । जिन शासन विख्यात ।। ५ ।। सवि[illegible] ।। १
म पा रे ईम वास [illegible] पारसी ।। से तिणि जिणसाननरणई डाई पहली ढाल ।। सूगावती राणी गुण गाया ।। ल
वो ने भाणयाबो । [illegible]वती सील सुरंगा । नमुवा रिसनी अ सिंच गावे ।। २ ।। सू गा० ।। सेनीयांमो हि सूगावती रो
रूपढ जिन दवया णीथा ।। ३ ।। सू० ।। पाम जा[illegible]कइ नाम लीजइ । जिम विष अमृत पीजइ वे ।। ४ ।। सू० ।। स
तामु [illegible] सुल नो ए विशेषा । कोनि सु[illegible] अवदेख्या वे ।। ५ ।। सू० ।। सुमतिनाथ श्री पास जिणंदा । मूलनायक
सुखकंद वे ।। ६ ।। सू० ।। खरतर संघ तणा सुलतांणी । नगर सुध्य दीवाली वे ।। ७ ।। सू० ।। सिंधु श्रावक सदा
रागी । गुरु गछ का[illegible]रागी वे ।। ८ ।। सू० ।। [illegible] श्रावक तेज मल भेरा । मरमल[illegible]मके रा वे ।। ९ ।। सू० ।।
करम चंद [illegible] ढोणी ना । साहब सहं सुख दीना वे ।। १० ।। सू० ।। न सुआ आयहक रिए ग्रथ कीधी । नाम मो ह[illegible]
लिवो भवि ।। ११ ।। सू० ।। मोह न वेलचउ रमन मोहइ । रा जसनाम मोहइ वे ।। १२ ।। सू गा० ।। सिंधु पुर न [illegible]
र गुजराती । ढाल नवी नव सोनीव ।। १३ ।। सू० ।। चतुर विचक्षण [illegible] हाई । ढाल मत्ती [illegible] को ई वे ।। १४
४ ।। सू० ।। सागीह उमहं नही सकारा । [illegible] जिम हारा वे ।। १५ ।। सू गा० ।। लागइ मन मोहइ [illegible] रागी ।। नि
मन मोहइ ढाल लागी वे ।। १६ ।। सू गा० ।। कनकसुंदर जीना विनती । [illegible] ।। १७ ।। सू गा० ।।
कंत विना जिम नारि विरंगी ।। राग विण ढाल न चंगी वे ।। १८ ।। सू गा० ।। साची ढाल राग सुं मेली । जिम मिश्री दूध
नेलवि ।। १९ ।। सू० ।। [illegible] ढाल राग सुं [illegible] । चतुर [illegible] दिखावे ।। २० ।। सू० ।। [illegible] २५